पतित से पावन बनने की युक्ति

(सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए)

डी.वी.डी.नं. 376, वी.सी.डी.नं. 2304, प्रातः क्लास- 04.11.66, रात्रि क्लास - 04.11.66, व्याख्या ता. 19.02.2017

प्रातः क्लास 4.11.1966 शुक्रवार के दिन वाणी चल रही थी। सातवें पेज के मध्यादि में बात चल रही थी- बाबा सभी सेण्टर्स के बच्चों के लिए डायरैक्शन देते हैं कि जो सर्विसेबल बच्चे हैं, उन्हें अपने पास टेपरिकॉर्डर रखना चाहिए। अभी टेपरिकॉर्डर तो बंद हो गए, वीडियो चल पड़ा, जिसमें बाबा की एक्युरेट आवाज़ भी होती है और दृष्टि भी होती है और दृष्टि के आधार पर थोड़े वायब्रेशन भी मिलते हैं। थोड़े वायब्रेशन इसलिए कहा कि टी.वी. की जो दृष्टि है, वो जड़त्वमई तो है, फिर भी चैतन्य सम्मुख दृष्टि की याद दिलाती है। तो हर बच्चे के पास सर्विस के लिए, किसी को समझाने के लिए, जो भी बच्चे सर्विस पर जाते हैं, ये सबके पास पहुँचाना पड़े, सुनाना पड़े, बाबा का आवाज़ एक्युरेट सुनाना पड़े।

तो सभी सेण्टर्स के सर्विसेबुल, वफ़ादार, फरमानबरदार, रूहानी बच्चों के प्रति मात-पिता और बाप-दादा का यादप्यार स्वीकार। ये टेप लेकर आनंद किशोर आ रहा है, जो लखनऊ में जाने वाला है। वो जो कुछ भी उनका वहाँ होगा, जगदीश के साथ काम दिया छपाने का या उनसे राय लेनी होगी, तो राय ले लेंगे। उनके साथ ये टेप और टोली बच्चों के लिए भेज रहे। अभी सबके लिए तो टोली भेज भी नहीं सकते हैं। जिस-2 सेण्टर में वो जाकर जो रहते हैं, वहाँ के लिए थोड़ी टोली भेज देते हैं। ये टोली भी आगे चल करके आहिस्ते-2 बंद हो जावेगी। समझा ना! क्यों बंद हो जावेगी? कि ये टोली देना, टोली खाना, ये अच्छा भी नहीं लगता है। बच्चों की रूहानी स्टेज बढ़ रही है, रूह की स्थिति में स्थित होने की प्रैक्टिस बढ़ रही है, तो ये टोली खाना, टोली देना क्या अच्छा है? जो भी दिल्ली में जाए, एक सेण्टर के पास टोली जावे मधुबन से, बाबा से और दूसरे सेण्टरों को न मिले, ये बात भी तो बाबा को अच्छी नहीं लगती है ना! क्यों? दूसरे सेण्टरों को क्यों नहीं मिल सकती? मिल सकती है या नहीं मिल सकती? (किसी ने कहा- मिल सकती है) एक सेण्टर पर बाबा किसी बच्चे को भेजें और 2-4 सेण्टर के आस-पास के बच्चे आ जावें। तो जो भी आवेंगे, उनको तो टोली मिल जावेगी; क्या सबको मिल जावेगी? (किसी ने कहा- नहीं) तो ये अच्छा नहीं लगता है। तो बताओ, अभी सभी सेण्टर्स के लिए कितनी टोली बनानी पड़ेगी। बाकी बोलो तो हम भूँगड़ा बनाय सकते हैं- भुना हुआ चना। वो जो खाँड-भूँगड़ा होता है ना! हाँ, वो हम बनाय सकते हैं, जो एक-2 को एक-2 मिल जावे; क्योंकि एक भी ये सिर्फ सौभाग्यशाली के हाथ में, मुख में पड़ सकती है; क्योंकि शिवबाबा बच्चों के लिए टोली भेज देते हैं। वो तो एक कुण का भी होता है ना! भक्तिमार्ग में थोड़ा कुण का प्रसाद भी लेते हैं ना! ऐसे-2 करके थोड़ा-2 मुख में डालते जाते हैं। कोई बच्चे हैं, जो टोली अभी याद करते हैं। तो जो जभी कोई जाएँगे, तो ऐसी टोली भेजें जो सबके मुख में पड़े। अभी उस बेहद की टोली की ऐसी इन्वेन्शन निकाल रहे हैं। भक्तिमार्ग में जो टोली होती है, वो हद की होती है या बेहद की होती है? (किसी ने कहा- हद की) अब इन्वेन्शन कौन-सी निकाल रहे हैं कि ऐसी टोली निकालें, जो सबका मुँह मीठा हो जावे। खण्ड-भूँगड़ा भी देखते हैं, बनते हैं या और कोई चीज़ बन जाती है। (किसी ने कुछ कहा-...) रेवड़ी भी नहीं; क्योंकि रेवड़ी भी बहुत कुछ खा जावेंगे। कुड़कुड़ी होती है ना! खाजे का भी जब तक अढ़ाई तीन सेर कुल न हो तब तक पूरा तिर नहीं पड़ेगा। फिर भी कुछ-न-कुछ युक्ति करेंगे जो सबके मुख में, जब

भी कोई जावे, तो सबके मुख में पड़े। सबके मुख में पड़ेगी, तो बाबा तो खुश होंगे ना! बच्चे भी खुश होंगे कि बाबा ने, शिवबाबा ने भेजा। तो उस समय भी जब खाएँगे, शिवबाबा को याद करेंगे। शिवबाबा को याद करेंगे तो कितनी कमाई हो जावेगी। ये भी तो कमाई के हैं ना! बाबा जो भी याद देते हैं, सौगात देते हैं, ये किसलिए देते हैं? शिवबाबा की याद आती रहे। तो देखेंगे, सौगात को बार-2 देखेंगे कि शिवबाबा ने दी है, ये सौगात हमें शिवबाबा से मिली है। अच्छा, शिवबाबा को एक दफ़ा भी याद किया ना, तो भी बड़ी कमाई हो जाती है। ओम् शांति।

आज का रात्रि क्लास है- 4.11.1966। कोई मनुष्य हैं, जो मनुष्यों को बैठ पढ़ाते हैं। पढ़ाने के लिए बैठते हैं, सिखलाते हैं, खाते हैं, पीते हैं, खेलते हैं, कूदते हैं, लड़ते हैं, झगड़ते हैं, ऐसे भी होता है ना! और यहाँ कौन बैठा है? अरे! (किसी ने कहा- बाप) बात किसकी हो रही है- टीचर की, बाप की या सद्गुरू की? टीचर की बात हो रही है। दुनियाँ का मिसाल दिया कि कोई मनुष्य होते हैं, मनुष्यों को पढ़ाते हैं। यहाँ सुप्रीम टीचर पढ़ाते हैं, तो बच्चों के साथ बैठेंगे ना; कि नहीं बैठेंगे? (किसी ने कहा- बैठेंगे) सिखलावेंगे ना! खाते-पीते हैं या नहीं खाते-पीते हैं बच्चों के साथ? खाते-पीते भी हैं, खेलते हैं, कूदते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं, ऐसे भी होता है ना! गुप्त वेश में यहाँ बाप बैठा हुआ है। गुप्त वेश में बैठा हुआ है, तो कोई पहचान पाते हैं, कोई नहीं पहचान पाते हैं। नहीं पहचान पाते हैं तो लड़ेंगे-झगड़ेंगे ना! साधारण समझेंगे, भगवान के रूप में निश्चय नहीं बैठा है, तो कभी कोई बात को लेकर लड़ेंगे-झगड़ेंगे ना! अब ये गुप्त वेश है। वास्तव में तो गुप्त वेश नहीं। वास्तव में क्यों कहा? क्योंकि परिचय तो पूरा मिल गया ना! ज्ञानयुक्त परिचय मिल गया तो गुप्त वेश रहा? (किसी ने कहा- नहीं रहा)

देखो, चित्रों में तो दिखलाते हैं, शिवबाबा भी है, ब्रह्मा भी है। कौन-से चित्र में दिखलाया? (किसी ने कहा- त्रिमूर्ति में) त्रिमूर्ति के चित्र में कौन शिवबाबा है, कौन ब्रह्मा बाबा है? (किसी ने कहा- शंकर को कहा...) शंकर को तो मुरली में 'ताऊ' कहा है, शिवबाबा तो नहीं कहा। शिवबाबा किसे कहें? (किसी ने कहा- साकार और निराकार के मेल को) शंकर सूक्ष्मवतनवासी होता है या साकारवतन वासी होता है? (किसी ने कहा- सूक्ष्मवतनवासी) उसको बाबा/ग्रैण्डफादर कहें? (किसी ने कहा- नहीं) तो बोला- शिवबाबा भी है, ब्रह्मा भी है, चित्र में दिखलाते हैं। कौन है शिवबाबा? (किसी ने कहा- तीसरा नेत्रधारी) जो त्रिमूर्ति का चित्र बाबा ने साक्षात्कार से बनवाया, उसमें तीसरा नेत्र दिखाया क्या? वहाँ तो दिखाया नहीं। ब्रह्मा का चित्र तो है, फिर शिवबाबा का चित्र नहीं है? (किसी ने कहा- निराकारी चित्र है) गीता में तो लिखा है- ''ये सारा संसार अव्यक्त-मूर्ति के द्वारा व्याप्त है।'' (गीता 9/4) मूर्ति तो है; लेकिन अव्यक्त है। त्रिमूर्ति के चित्र में भी, तीन मूर्तियों के ऊपर मूर्ति का बड़ा रूप रखा है या नहीं रखा है, जिसमें बीच में बिंदु दिखाया है? (किसी ने कहा- है) तो बड़ा रूप साकार नहीं है? (किसी ने कहा- है) साकार है तो मूर्ति नहीं है? (किसी ने कहा- है) वो मूर्ति शिव के मंदिरों में नहीं रखी हुई है? (किसी ने कहा- रखी है) लेकिन अव्यक्त-मूर्ति है। अव्यक्त क्यों कहा? वो लिंग-मूर्ति आँखों से तो दिखाई देती है; लेकिन अव्यक्त-मूर्ति इसलिए कहा कि उसको नाक, आँख, कान, हाथ, पाँव नहीं हैं। क्यों नहीं हैं? ये दिखाने के लिए कि ये साकार तो है; लेकिन साकार होते हुए भी बुद्धि से इन्द्रियों को याद नहीं करता है, इन्द्रियों के भोग अनुभव नहीं करता है। इसलिए मूर्ति तो है; लेकिन कैसी मूर्ति? अव्यक्त निराकार मूर्ति है। गायन है, कहाँ गायन है? अरे, शास्त्रों में ही गायन होता है ना! तो कौन-से शास्त्र में गायन है? गीता में ही गायन है। किन शब्दों में? ''अव्यक्तमूर्तिना'' (गीता 9/4)। अव्यक्त-मूर्ति के द्वारा, शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य-सृष्टि रचते हैं। कौन-से ब्रह्मा के द्वारा? ब्रह्मा तो अनेकों के नाम हैं। 'जैसा काम वैसा नाम', तो कौन-से ब्रह्मा की बात उठाएँगे? (किसी ने कहा- प्रजापिता ब्रह्मा की) वो तो प्रजापिता है; पिता है या माता है? (किसी ने कहा- पिता है) पिता पुरुष को कहा जाता है या स्त्री को कहा जाता है? (किसी ने कहा- पुरुष को) यहाँ तो ब्रह्मा की बात है।

शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य-सृष्टि रचते हैं- ये भी गायन है। वो भी गायन है- अव्यक्त-मूर्तिना, लिंग-रूप और ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण-सृष्टि रचते हैं- ये भी गायन है। और ज़रूर मनुष्य-सृष्टि रचेंगे। ब्रह्मा क्या है? मनुष्य है या नहीं है? (किसी ने कहा- मनुष्य है) मनुष्य विकारी को कहा जाता है; निर्विकारी को देवता कहा जाता है। तो जो मनुष्य-सृष्टि रचेंगे, किसके द्वारा? (किसी ने कहा- ब्रह्मा द्वारा) ब्रह्मा विकारी या निर्विकारी? ब्रह्मा दाढ़ी-मूँछ वाले को क्या कहें? (किसी ने कहा- विकारी) ज़रूर मनुष्य-सृष्टि रचेंगे, तो ब्रह्मा की औलाद क्या कहे जावेंगे? (किसी ने कहा- ब्राह्मण) ब्राह्मण ही रचेंगे।

तो देखो, तुम ब्राह्मण बच्चे बैठे हो। किस रूप में? तुम बच्चे जो बैठे हो, क्या रूप बताया? प्रैक्टिकल में ब्रह्मा मुख की औलाद हो या नहीं हो? (किसी ने कहा- हैं) ब्रह्मा के मुख से सुन करके अपन को निश्चयबुद्धि बनाकर बैठे हो कि हम ब्राह्मण हैं, सृष्टि के आदिकाल के ब्राह्मण, ब्राह्मण चोटी जिन्हें कहा जाता है। तो तुम बच्चे जो बैठे हो, वो समझते हो कि मीठा-2 बाबा, हमारा बाबा हमको पढ़ाते हैं। ये भी कहेंगे। किसके लिए बोला? ये भी कहेंगे कि मीठे-2 बच्चे पढ़ते हैं। कौन? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा) ब्रह्मा बाबा सिर्फ? (किसी ने कहा- प्रजापिता ब्रह्मा) ब्रह्मा बाबा नहीं तो प्रजापिता ब्रह्मा! और 'भी' भी यहाँ लगा हुआ है। 'ये' एकवचन है या बहुवचन है? (किसी ने कहा- बहुवचन) 'कहेंगे', ये 'गे' और 'कहेगा'- यहाँ एकवचन है या बहुवचन है? (किसी ने कहा- बहुवचन है) तो 'ये' कह करके किसकी तरफ इशारा किया? कहेंगे! अभी नहीं। क्या बोला? ये भी कहेंगे, 'गे' माना भविष्य की तरफ बताया ना! और जो कहेंगे, वो एक हैं या दो आत्माएँ हैं? (किसी ने कहा- दो आत्माएँ) कौन-2? दादा लेखराज ब्रह्मा और प्रजापिता। तो ये भी कहेंगे कि मीठे-2 बच्चे पढ़ते हैं। पढ़ने वाले कैसे होंगे? मीठे-2 बच्चे शिवबाबा से पढ़ते हैं। तो इसको ही कहा जाता है- रूहानी शिक्षा। अब ये अंग्रेज़ी में कहा जाता है- रूहानी माना 'स्पिरिच्युअल'। अभी और कभी भी कोई भी स्पिरिच्युअल बाप पढ़ाते ही नहीं हैं। रूहानी स्टेज में रहने वाला और दुनिया का कोई भी टीचर होता है क्या? नहीं होता। वो तो जिस्मानी स्टेज में होते हैं। कोई किसको और यहाँ तो बहुत ही ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम स्पिरिच्युअल नॉलेज बताते हैं, ये करते हैं, हम वो करते हैं। तो वो स्पिरिच्युअल का अर्थ समझते नहीं हैं। स्पिरिच्युअल का अर्थ ही है 'रूहानी'। अब ये रूहानी नॉलेज तो रूहानी बाप ही बतावे; कि जिस्म को पैदा करने वाला बाप बतावे? रूहानी बाप ही बतावे, जो रूहानी बाप आ करके बच्चों को रूह की नॉलेज दे करके बताते हैं कि तुम कौन हो? तुम रूह हो। ये नॉलेज सिवाए रूहानी बाप के और कोई जिस्मानी मनुष्य तो देता ही नहीं। तो जो स्पिरिच्युअल नॉलेज है, वो टीचर्स जो दुनियावी मनुष्य हैं, वो भी इसको ही कह देते हैं कि हम स्पिरिच्युअल नॉलेज देते हैं। ये जो ज्ञान मिलता है ना शास्त्रों वगैरह का, बस इस शास्त्र के ज्ञान को ही 'स्पिरिच्युअल नॉलेज' कह देते हैं। मनुष्य जो बोलते हैं, वास्तव में उसको स्पिरिच्युअल कह ही नहीं सकते। क्यों नहीं कह सकते? क्योंकि पढ़ाने वाले जिस्मानी टीचर्स होते हैं, वो स्प्रिट अर्थात् आत्मा की नॉलेज कैसे दे सकते हैं! स्पिरिच्युअल माना ही 'आध्यात्मिक'। 'अधि' माने अंदर, 'आत्मिक' माने आत्मा के अंदर। आत्मा के अंदर की बात जिस्मानी मनुष्य गुरू पढ़ावेगा? वो तो नहीं बताय सकता। आत्मा के अंदर की बात तो परमपिता परमात्मा, जो आत्माओं का बाप है, वो ही बता सकता है; क्योंकि आत्माओं का बाप ही एक है, जो जन्म-मरण के चक्र से न्यारा होने के कारण त्रिकालदर्शी है। मनुष्य-आत्माएँ त्रिकालदर्शी हैं? वो तो जन्म-मरण के चक्र में आती हैं; वो तो त्रिकालदर्शी हो ही नहीं सकतीं। मृत्यु होती है तो पूर्वजन्म की सारी बातें भूल जाती हैं।

स्पिरिच्युअल कहा जाता है सिर्फ स्पिरिच्युअल फादर को, रूह को कहा जाता है। यहाँ मीठे-2 बच्चे बैठे हैं। क्लास में बैठते हैं तो अंदर में आता है- बाबा आ जावें। ये इस तरह का संकल्प अंदर-2 जो कहते हैं, वो कौन कहते

हैं कि बाबा आ जावें? जिस्मानी बच्चे जो अपन को जिस्म समझते हैं या रूहानी बच्चे कहते हैं? रूहानी बच्चे कहते हैं- बाबा आवें। तो आत्माएँ बैठ करके कहती हैं- बाबा आवें और आत्माएँ पुकारती हैं कि बाबा आवें। आ करके क्या करें? कोई ज्ञान देने के लिए बुलाते हैं? दुनिया में भी जो भक्त लोग बुलाते हैं, किसलिए बुलाते हैं कि हे भगवान, आओ! हमको ज्ञान दो? किसलिए बुलाते हैं? हे भगवान, आओ! हम मूत-पलीती बन गए, हमको पावन देवता बनाओ। तो आ करके जो हम पतित आत्माएँ बन गई हैं; कौन-सी इंद्रियों से- श्रेष्ठ ज्ञान इन्द्रियों से पतित बन गईं या भ्रष्ट इन्द्रियों से पतित बन गईं? काहे से पतित बन गईं? भ्रष्ट इन्द्रियों से जो पतित बन गईं, क्या कहते हैं? आ करके हमको पावन बनाओ। सुख तो देवताएँ भी भोगते हैं; लेकिन हमारी आदत ऐसी पड़ गई है कि हम भ्रष्ट इन्द्रियों से सुख भोगने के आदी हो गए और हमको वो ज्ञान-इन्द्रियों का सुख भूल ही गया। वो सुख हमको जैसे सुख भासता ही नहीं- ऐसी पतित आत्माएँ बन गईं। कहा जाता है ना- पतित आत्मा, पुण्य आत्मा। किस आधार पर कहते हैं? पतित इन्द्रियों से कर्म करे तो पतित आत्मा और ज्ञान इन्द्रियाँ, जिन्हें श्रेष्ठ इन्द्रियाँ कहा जाता है, उनसे कर्म करे तो श्रेष्ठ आत्मा। तो जब पतित आत्मा हैं तो उस समय पुण्य आत्मा होती ही नहीं। किस समय? कौन-से युग में? द्वापर और कलियुग में जब पतित आत्माएँ हैं, तो वहाँ पुण्य आत्मा कोई, देवता कोई होता ही नहीं। जब पुण्य आत्माएँ हैं, कहाँ? सतयुग-त्रेता में। तो वहाँ कोई पतित आत्मा होती ही नहीं और यहाँ सभी पुकारते हैं- हे पतित-पावन! आओ। तो क्या हैं- पतित हैं या पावन हैं? (किसी ने कहा- पतित हैं) तो अभी ये जो बच्चे जानते हैं कि बाबा हमको यहाँ बैठ करके क्या कर रहे हैं? (किसी ने कहा- पावन बनाय रहे हैं) पावन बनाने के लिए ज्ञान-इन्द्रियों में सबसे श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ इन्द्रिय कौन-सी हैं? (किसी ने कहा- आँखें) तो बाबा के सामने जब हम बच्चे आ करके बैठते हैं, तो कौन-सी इन्द्रियों का संग का रंग लेते हैं? (किसी ने कहा- आँखों का) इन्द्रियों का संग का रंग लेते हैं। तो बाबा हमको ये युक्ति बताते हैं- भ्रष्ट इन्द्रियों के संग के रंग से पतित बन गए। तो क्या करना है? श्रेष्ठ इन्द्रियों के संग के रंग से पावन बनना है। तो क्या अनेकों की श्रेष्ठ इन्द्रियों के संग के रंग से पावन बनेंगे? अनेकों की इन्द्रियों के संग के रंग से पावन नहीं बन सकते। जो बेसिक ज्ञान लेने वाले हैं, ईश्वरीय ज्ञान तो लेते हैं; लेकिन निचली कक्षा का ज्ञान ले रहे हैं, उनकी बुद्धि में क्या है? अनेकों के ज्ञान-इन्द्रियों से, खास दृष्टि का संग का रंग लेने से हम पावन बन सकते हैं या नहीं बन सकते हैं? वो बच्चाबुद्धि स्टुडेण्ट क्या समझते हैं? वो समझते हैं- हम पावन बन सकते हैं। तुम क्या समझते हो? अनेकों के संग के रंग से हम पावन नहीं बन सकते। कैसे बन सकते हैं? एक के संग के रंग से। एक कौन- एक्स, वाई, ज़ेड, कोई भी एक? नहीं! जिसको हम ऊँच-ते-ऊँच समझते हैं, ऊँच-ते-ऊँच के रूप से हम निश्चयबुद्धि बने हैं, उसके द्वारा हम पतित से पावन बनते हैं।

तो बच्चे जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं। अच्छा कर रहे हैं या बुरा कर रहे हैं? (किसी ने कहा- अच्छा) बच्चे जानते हैं कि बाबा हमको ये युक्ति बताय रहे हैं। क्या युक्ति? कि जो विधर्मी धर्मपिताएँ हैं, विदेशी हैं, व्यभिचारी हैं, व्यभिचार को बढ़ावा देने वाले हैं, भ्रष्ट इन्द्रियों के सुख को बढ़ावा देने वाले हैं, उनके संग के रंग में आने से हम भारतवासी पतित बन गए। अब पावन बनने के लिए क्या करें? हम भारतवासी तो पहले देवताएँ थे। अभी तो हम पतित मनुष्य बन पड़े। तो पतित से पावन देवता कैसे बनें? उल्टी सीढ़ी चढ़नी पड़े या नहीं चढ़नी पड़े? (किसी ने कहा- चढ़नी पड़े) तो उल्टी सीढ़ी चढ़ने की युक्ति बताई। पहले क्या करना पड़े? उस एक को समझना पड़े, जिस एक के संग के रंग से हम पतित से पावन बनें। किस एक को समझना पड़े? एक ज्योतिबिंदु शिवबाप को? एक ज्योतिबिंदु को समझने से हम पावन बनेंगे या नहीं बनेंगे? (किसी ने कहा- निराकार और साकार को समझने से) अरे! एक की ही तो बात हो रही है। तो एक को हमने जान लिया कि एक ज्योतिबिंदु है आत्मा, जिसको हमने समझ लिया कि वो आत्माओं का बाप है, तो उसके संग के रंग से हम पावन नहीं बनेंगे? हाँ, बनेंगे! ब्रह्माकुमारियाँ भी यही कहती हैं कि

एक बिदु के संग के रंग से हम पावन बनेंगे। कहती हैं या नहीं कहती हैं? (किसी ने कहा- कहती हैं) तो बनेंगे? (किसी ने कहा- नहीं बनेंगे) क्यों नहीं बनेंगे? (किसी ने कुछ कहा-...) सवाल ये है- बिन्दु-2, 500-700 करोड़ बिन्दु, ज्योतिबिदु मनुष्यात्माएँ और पशु-पक्षी, पतंगे, कीटाणु आदि ढेर-के-ढेर सारे ही ज्योतिबिदु, पता कैसे चलेगा कि इनमें सारी बिदु-2 आत्माओं का परमपिता, जिसका कोई पिता नहीं है, वो कौन-सा है? (किसी ने कहा- ज्ञान के आधार पर) ज्ञान? पहचान तो लिया- हम आत्मा हैं, तुम हो आत्मा, हम आत्मा भाई-2, हमारा बाप- ज्योतिबिन्दु परमात्मा। (किसी ने कहा- साकार में आए हुए हैं) जब तक मीडिया न हो, तब तक हम उसका संग का रंग नहीं ले सकते। जो भी विधर्मी धर्मपिताएँ हैं, या विदेशी हैं, उनके फॉलोअर्स हैं, वो निराकार को मानते हैं या साकार को मानते हैं? (किसी ने कहा- निराकार को) सिर्फ निराकार ज्योतिबिदु को पहचान लिया तो पावन देवता बन गए कि पतित दुनिया में ही आ करके जन्म लेते हैं? (किसी ने कहा- पतित दुनिया में) हमको क्या बनना है? हमको तो पावन देवता बनना है। हमारी तो तुष्टि नहीं होती; काहे से? भ्रष्ट इन्द्रियों के सुख से हमारी पूर्ति, हमारी तुष्टि कोई जीवन में हुई नहीं; अभी भी नहीं है। तो हम क्या चाहते हैं? हमको पूर्वजन्मों की स्मृति आएगी या नहीं आएगी? हमको पूर्वजन्मों की स्मृति आती है कि हम पहले देवता थे और अभी हम संग के रंग से पतित बन गए, अब हमें पावन बनना है। तो उन विधर्मी धर्मपिताओं ने, उनके फॉलोअर्स ने तो निराकार को ही समझा। सिर्फ निराकार की बेसिक नॉलेज ली; एडवांस ज्ञान की गहरी नॉलेज के ऊपर उनको विश्वास नहीं हुआ। क्या गहरी नॉलेज? कि निराकार का संग का रंग लगता नहीं और निराकार ही अगर हमारा बाप है, तो निराकार से निराकारी वर्सा मिलेगा या साकारी वर्सा मिलेगा? (किसी ने कहा- निराकारी वर्सा) निराकारी वर्सा क्या होता है? निराकारी वर्सा- ज्ञान। तो बस ज्ञान मिल जाए, उससे पूर्ति हो जाएगी? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों? ज्ञान भी ऐसा हो कि सहज ज्ञान हो, सहज याद हो। निराकार बिदु को याद करना सहज है या निराकार जिस साकार मुकर्रर रथ में आ करके नई सृष्टि रचने का सारा कार्य करता-कराता है, उसको याद करने से हमको प्राप्ति होगी? (किसी ने कहा- साकार में निराकार परमपिता को याद करने से प्राप्ति होगी।) इस सारी सृष्टि को नई सृष्टि बनाना, पाँच तत्वों वाली नई सृष्टि बनाना; पाँच तत्वों का अच्छे-से-अच्छा उदाहरण है- मनुष्य का शरीर, देवताओं का शरीर; तो उस शरीर के द्वारा हम सुख भोगें, लेकिन दुख न भोगें, ऐसी सृष्टि का हमने अनुभव किया है। उन धर्मपिताओं ने सिर्फ दुखी दुनिया का ही अनुभव लिया है या साथ-2 अति सुख, आत्यान्तिक सुख का अनुभव लिया है? (किसी ने कहा- नहीं लिया)

तो बाबा हमको युक्ति बताय रहे हैं कि तुम मनुष्य से देवता कैसे बन सकते हो। कैसे बन सकते हो? कि निराकार कैसे साकार में आकर नई सृष्टि रचता है, कैसे पुरानी सृष्टि का विनाश करता है और कैसे नई सृष्टि की पालना कराता है- इस गहराई को हम समझें। नहीं तो दूसरे धर्मपिताएँ और उनके फॉलोअर्स तो कह देते हैं- ''अल्लाह मियाँ ने जमीन बनाई, अल्लाह मियाँ ने आसमान बनाया, अल्लाह मियाँ ने चाँद बनाया, अल्लाह मियाँ ने समन्दर बनाया।'' अरे! बनाया तो कैसे बनाया, वो बतावेंगे? बताते हैं? (किसी ने कहा- नहीं बताते) कहते हैं- ''अल्लाह मियाँ ने ये फरमाया, अल्लाह मियाँ ने वो फरमाया।'' अरे! फरमाया तो क्या आसमान से आवाज़ आई? ऐसी आवाज़ तो कोई आती नहीं। उसको तो कान ही नहीं है। उसको नाक, आँख, कान हैं? (किसी ने कहा- नहीं) उसके लिए तो भारतवासी जानते हैं कि ''बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म, करै विधि नाना, आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।'' अब कैसे? सो तो बहुत-से भारतवासी भी नहीं जानते हैं। रामायण की ये चौपाइयाँ बोलने वाले, अर्थ बताने वाले जो पंडित हैं, बड़े-2 महात्माएँ हैं, वो भी नहीं जानते। तुम बच्चे तो जानते हो ना- बिना वाणी के वो कैसे दुनिया का बड़ा भारी वक्ता बनता है, जो निराकार आत्माओं का बिदु रूप निराकार बाप

है! उसे मुख तो होता ही नहीं; कैसे बनता है? (किसी ने कहा- साकार में प्रवेश करके) हाँ, कोई साकार में प्रवेश करके दुनिया का सबसे बड़ा वक्ता बनता है। तो उस दुनिया के सबसे बड़े वक्ता को जिसमें वो शिव ज्योतिबिंदु निराकार आत्माओं का बाप प्रवेश करके सारा कार्य कराते हैं- सृष्टि के निर्माण का, पुरानी सृष्टि के विनाश का और नई सृष्टि की पालना का, उस स्वरूप को पहचानें और पहचान करके दूसरों को भी उसका परिचय देवें। वो परिचय देने के लिए बाप की डायरैक्ट वाणी सुनाएँ, एक्युरेट वाणी सुनाएँ। एक्युरेट वाणी टेपरिकॉर्डर ही सुना सकता है, वीडियो सुनाय सकता है, वी.सी.डी. सुनाय सकती है। तो जो डायरैक्ट वाणी सुनाने वाला यंत्र है, उससे गहराई से समझेंगे या मनुष्य गुरू जो अपनी बात मिक्स करके सुनाते हैं, उससे समझेंगे? डायरैक्ट वाणी जो सुनेंगे, उनकी बुद्धि में जल्दी बैठेगा।

तो बाबा ये हमको युक्ति बताते हैं और बड़ी सिम्पुल युक्ति है- याद करो। किसको याद करो? पतित-पावन को याद करो। कैसे याद करें? बिंदु को याद करें? बिंदु को याद करने से पतित से पावन बन जावेंगे? हमारी बुद्धि रूपी आत्मा खुल जावेगी? (किसी ने कहा- नहीं) वो बी.के. वाले तो बिंदु को ही याद करते हैं। उनकी आत्मा खुल गई? खुल करके जो बाबा की वाणी है, जो टेपरिकॉर्डर की वाणी है, उसके मर्म को समझ सकती है? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों नहीं समझ सकती? कि बाबा ने जो डायरैक्शन दिया कि सेवा करने का सबसे अच्छा साधन है- टेपरिकॉर्डर, उसको काम में नहीं लाते; अपनी तिक-2 सुनाने लग पड़ते हैं। उस तिक-2 से दूसरों को समझ नहीं आता। उनकी बुद्धि में खुद ही नहीं बैठा हुआ है कि बाबा क्या समझाना चाहते हैं। बाबा तो यही बात समझाना चाहते हैं कि इस सृष्टि में जो शिवबाबा का साकार पार्टधारी है, जो इस सृष्टि पर सदा कायम है, वो कौन है। उसके सिवाए कोई है, जो इस सृष्टि पर सदा कायम हो? कुछ भी नहीं है। एक ही है, जिसे भक्तिमार्ग में भी गाया जाता है कि सृष्टि का विनाश होता है, महामृत्यु होती है, तो भी उसको मृत्यु होते हुए किसी ने देखा नहीं और उसका जन्म ही लेते हुए किसी ने देखा ही नहीं। उसका न जन्म है, न मृत्यु। कौन है ऐसा देवता? शंकर ही गाया हुआ है। वो भी शंकर के सम्पन्न रूप का चित्र बना हुआ है या अधूरे रूप का चित्र है? (किसी ने कहा- सम्पन्न रूप का) मंदिर में जिसकी विशेष पूजा होती है, वो सम्पन्न रूप क्या है? (किसी ने कहा- शिवलिंग) वो सम्पन्न रूप है, साकार शरीर होते हुए भी साकारी इन्द्रियों की स्मृति नहीं रहती है, साकारी इन्द्रियों की स्मृति से परे चला गया, बाप समान निराकारी स्टेज में टिक गया, उसकी पूजा होती है। मंदिरों में शिव ज्योतिबिंदु बाप की पूजा करते हैं या पत्थर के लिंग की पूजा करते हैं? (किसी ने कहा- पत्थर के लिंग की) क्यों? क्योंकि वो भी आखिरी जन्म में पत्थरबुद्धि बन जाता है; इसलिए ये रूप बनाए गए हैं लिंग के। लिंग की सात्विक पूजा जब होती थी तो सोने के लिंग भी बनाते थे, स्वर्ण लिंग कहा जाता था। भक्तों की सतोसामान्य स्टेज बनी तो चाँदी के रजत लिंग बनाने शुरू कर दिए, जब रजोप्रधान स्टेज हुई तो तांबे के लिंग बनाना शुरू कर दिए और जब तमोप्रधान स्टेज बन गई कलियुग में, तो लोहे और पत्थर के लिंग बनने लगे। तो ये शूटिंग कहाँ हुई होगी? ज़रूर संगमयुग में ये शूटिंग होती है, रिहर्सल है यहाँ की।

तो याद करो, पतित-पावन को याद करो। किसको याद करो? (किसी ने कहा-ज्योतिबिंदु को) ज्योतिबिंदु को याद करें? (किसी ने कहा- साकार में निराकार) हाँ, ज्योतिबिंदु को याद न करो, उस ज्योतिबिंदु को उस मुकर्रर रथ में याद करो। उस मुकर्रर शरीरधारी, पार्टधारी में याद करो, जो अपनी इन्द्रियों के द्वारा पतितों को पावन बनाने वाला है। वो पावन बनाने वाला है या उसमें जो प्रवेश करता है, वो पावन बनाने वाला है? जो प्रवेश करता है, वो भी पावन बनाने वाला है और प्रवेश करने वाला ये अंजाम करता है- मैं तुम बच्चों को नंबरवार आप समान बनाकर जाऊँगा। ''तुम बच्चों को आप समान बनाकर साथ ले जाते हैं।'' (मु.ता.10.9.73 पृ.3 मध्य) तो कोई 100 परसेण्ट बाप

समान, शिव ज्योतिबिंदु समान निराकारी बनेगा या नहीं बनेगा? (किसी ने कहा- बनेगा) तो जो बनता है, उसकी पूजा होती है। उसको कहा जाता है, निराकारी बन गया तो बाप समान बन गया या नहीं बन गया ? (किसी ने कहा- बन गया) जैसे बाप विश्व का कल्याणकारी है, वैसे वो विश्व-कल्याणकारी है या नहीं है? कि अपने-2 स्टेट का कल्याणकारी है? (किसी ने कहा- नहीं, सारे विश्व का) या जहाँ जन्म लेता है वहाँ का कल्याणकारी है? विश्व-कल्याणकारी बन जाता है। तो कल्याणकारी को ही 'शिव' कहा जाता है। अब शिव के साथ एक का ही नाम है इतनी बड़ी दुनियाँ में, किसका नाम? (किसी ने कहा- शंकर) शंकर का नाम क्यों है? ब्रह्मा में भी तो प्रवेश करता है! नहीं? (किसी ने कहा- माँ के रूप में) दादा लेखराज ब्रह्मा में प्रवेश नहीं करता? (किसी ने कहा- करता है) और ब्रह्मा एक का नाम है या अनेकों के नाम हैं? (किसी ने कहा- अनेकों के नाम) एक रूप से ब्रह्मा माना जाता है, चित्र बनते हैं या पंचमुखी/चतुर्मुखी ब्रह्मा भी गाया जाता है? (किसी ने कहा- पंचमुखी ब्रह्मा भी गाया जाता है) बाप ने तो बोला है कि मैं जिस तन में भी प्रवेश करता हूँ, उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ और ब्रह्मा सो विष्णु बनता है। इसका मतलब जिस नंबर का ब्रह्मा उसी नंबर का विष्णु बनता होगा। तो ब्रह्मा कोई एक का नाम नहीं है, पंचमुखी ब्रह्मा/चतुर्मुखी ब्रह्मा प्रसिद्ध है। विष्णु भी एक का नाम है? नहीं, विष्णु भी पाँच आत्माएँ हैं। चार आत्माएँ तो चार भुजाओं के रूप में प्रत्यक्ष देखने में आती हैं; परंतु भुजाएँ अपने-आप चलती हैं या कोई चलाने वाला होता है? (किसी ने कहा- चलाने वाला होता है) चलाने वाला ऊपर होता है या नीचे होता है? भुजाओं से ऊँची की स्टेज में होता है। तो वो चलाने वाली जो आत्मा है, उसका नाम शास्त्रों में भी 'परम्ब्रह्म' रखा है। जो परम्ब्रह्म है, प्रजापिता ब्रह्मा जिसको कहा जाता है, जो शिव समान रूप को धारण कर लेता है, उस शिव समान साकार में निराकार को याद करने से हम पतित से पावन बनेंगे या कोई और को याद करने से पतित से पावन बनेंगे? दूसरे जो ब्रह्मा हैं, जो विष्णु बनने वाले हैं, जड़ भुजाओं के रूप में दिखाए जाते हैं, उनको याद करने से पतित से पावन नहीं बनेंगे? (किसी ने कहा- नहीं बनेंगे) क्यों नहीं बनेंगे? वो विष्णु के रूप नहीं हैं? हैं तो, वो जो रूप हैं ब्रह्मा के, वो ऐसा रूप नहीं हैं, जो स्थापना में भी हों, विनाश में भी हों और पालना में भी हों- तीनों रूपों में एक ही रूप, जिसको कहते हैं 'त्रिमूर्ति हाउस'। यादगार क्या बनी हुई है? कैसा हाउस? त्रिमूर्ति हाउस, त्रिमूर्ति रोड। रोड तो एक ही है; लेकिन नाम 'त्रिमूर्ति रोड' रखा। क्यों? क्योंकि ज़रूर एक ही मूर्ति में तीनों कार्य साबित हो जाते हैं।

तो बोला- उसे याद करो, पतित-पावन को याद करो, नहीं तो कैसे पावन बनेंगे? नहीं तो और क्या उपाय करें सिवाय याद करने के। याद कैसे आती है? रसगुल्ला खाया होगा तब याद आएगा या बिना खाए याद आएगा? खाया होगा तो याद आएगा; खाया ही नहीं, देखा ही नहीं, सूँघा ही नहीं, तो याद कैसे आएगा! सूँघना, खाना, देखना- ये इन्द्रियों के द्वारा होता है या बिना इन्द्रियों के होता है? (किसी ने कहा- इन्द्रियों के द्वारा) तो इन्द्रियों के द्वारा जो रस लेंगे, वो याद तो ज़रूर आएगा। तो युक्ति बताते हैं। बाबा हमको युक्ति बताते हैं कि कैसे याद करें। कैसे याद करें? (किसी ने कहा- साकार में निराकार को) सीधा-2 साकार में निराकार को याद करने लगें? कोई ने कह दिया- ये है शिवबाबा, वहाँ आया हुआ है, भगवान आया हुआ है, तो उसे याद करने लगें? (किसी ने कहा- ज्ञान के आधार पर) हाँ! ज्ञान माने समझ, बुद्धि से समझें। ऐसे किसी की सुनी-सुनाई बातों से तो भारतवासियों ने दुर्गति पाई। ''सुनी-सुनाई बातों पर ही भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है।'' (मु.ता.30.1.71 पृ.4 आदि) हम भी सुनी-सुनाई बातों के आधार पर अगर पक्का कर देंगे, निश्चय कर लेंगे, तो आज निश्चय करेंगे, कल निश्चय उड़ जाएगा। अपनी बुद्धि से फैसला करेंगे तो टिके रहेंगे।

तो बताया- गंगा-जमुना में स्नान करने और कराने वाले भक्त कहे जाते हैं। यमुना का ज्ञान-जल कैसा होगा?

(किसी ने कहा- काला) काला क्यों? अरे, दिल्ली में यमुना देखी? ठहरा हुआ पानी है। गर्मियों में क्या होता है? जब बहुत गर्मी पड़ती है तो क्या हो जाता है? काला रंग हो जाता है ज्ञान-जल का। कैसे काला जल हो जाता है? (किसी ने कहा- रुका हुआ) रुका हुआ क्यों हो जाता है? (किसी ने कहा- बाप से कनेक्शन नहीं) नहीं! उसमें इतना अथाह जल अनवरत नहीं बहता है। दिल्ली में तो 7-7, 8-8, 9-9 नाले गिर रहे हैं- गंदगी के नाले; वो विषैले नाले हैं या स्वच्छ जल के हैं? (किसी ने कहा- विषैले) ऐसे विषैले ह्यूमन नाले जब गिरते हैं नदी में, तो नदी का जल कैसा हो जावेगा? काला पड़ जाता है। तो जमुना में स्नान भक्त कराते हैं और करते हैं। और गंगा में? गंगा भी लम्बे समय तक, सतयुग से ले करके कलियुग के आदि तक, सतोप्रधान समय में, सतोप्रधान कलियुग में सात्विक रहती है भले; फिर भी अंत में क्या हो जाती है? (किसी ने कहा- पतित हो जाती है) उसका भी गायन हो जाता है- 'राम तेरी गंगा मैली'। आखरीन वो गंगा के किनारे बैठने वाले जो भक्त गण हैं, संन्यासी हैं, चौकड़ी मारकर गंगा के किनारे बैठते हैं, उनके संग के रंग से गंगा भी मैली हो जाती है। तो उस गंगा में स्नान करने से भक्त बनेंगे, ज्ञान-सागर के बच्चे 'ज्ञानी तू आत्मा' नहीं बन सकते। तो क्या करें जो पतित से पावन बनें? गंगा में, यमुना में, भारत की कोई भी नदियों में स्नान करें, तो भी पावन नहीं बनेंगे। विदेशी नदियों की तो बात ही छोड़ दो। उन विदेशी नदियों में तो भक्तिमार्ग में भी कोई स्नान करने नहीं जाता है। क्यों नहीं जाता? अरे! वो चैतन्य नदियाँ जो विदेशी हैं, वो एक बार शादी करती हैं कि अनेक बार शादियाँ करती हैं? (किसी ने कहा- अनेक बार) तो पतित बनती हैं, वेश्या बनती हैं या नहीं बनती हैं? वेश्या बन जाती हैं। तो उनका जल भी कैसा होगा? उनके अंदर जो संकल्प चलेंगे, वो विषैले संकल्प चलेंगे या निर्विष संकल्प चलेंगे? विषैले संकल्प चलेंगे। तो देखो, गंगा-यमुना आदि नदियों में स्नान करने से भी पावन नहीं बन सकते। क्यों नहीं बन सकते? वो नदियाँ कोई सागर नहीं हैं। गायन क्या है? सागर-मंथन से अमृत निकलता है या नदियों के मंथन से निकलता है? (किसी ने कहा- सागर-मंथन से) नदियों के मेले जहाँ इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैला इकट्ठा होता है या अमृत इकट्ठा होता है? (किसी ने कहा- मैला) तो गायन भी है- ''और मेले बार-2, गंगा-सागर एक बार''। तो देखो, और तो कोई उपाय समझ में नहीं आता है। समझ में आ ही नहीं सकेगा, कोई और युक्ति निकाल ही नहीं सकेंगे। 'सकेंगे' कब के लिए बताया? पतित से पावन बनने की युक्ति निकाल ही नहीं सकेंगे- कब के लिए बताया? भविष्य के लिए या सन् 1966 की मुरली चली है, उस समय के लिए? (किसी ने कहा- भविष्य के लिए) हाँ, भविष्य में कोई प्रयत्न भी करे कि ये ह्यूमन जमुना नदी में स्नान करने से हम पावन बन जाएँगे, ये चैतन्य गंगा नदी है, इसमें स्नान करने से, इसकी वाणी सुनने से हम पावन बन जाएँगे, ये तो हो ही नहीं सकता। कोई युक्ति नहीं निकाल सकेंगे सिवाय एक के।

पतित-पावन ऊपर वाले को कहते हैं। किसको कहते हैं? (किसी ने कहा- ऊपर वाले को) परमधाम में रहने वाले को ना! (किसी ने कहा- नहीं) अरे! ऊपर वाला उससे ज़्यादा कोई है, जो 5000 वर्ष के चक्र में लगातार संगमयुग के सिवाय सदा ही ऊँचे स्टेज में रहता है। उससे ज़्यादा ऊँचा कोई है? (किसी ने कहा- ऊँची स्टेज में रहता है) तो वो ही एक हुआ ना! उसको याद करने से हम पतित से पावन बनेंगे ना! अरे, बनेंगे तो; लेकिन पहचानेंगे कैसे? इस सृष्टि पर पतित से पावन बनना है या ऊपर जा करके पतित से पावन बनना है? (किसी ने कहा- इसी सृष्टि पर) तो इस सृष्टि पर रहते हुए हम पतित से पावन कैसे बनेंगे? उसे पहचाने बग़ैर बन जाएँगे? इतने बिंदु-2 आत्माएँ, उनमें से वो कौन-सा पर्टिकुलर बिंदु है, जिसको हम याद करें तो उसके संग के रंग से पतित से पावन बनें? तो ऊपर वाला कौन हुआ, जो सर्वशक्तिवान है, सर्व शक्तियों की अथॉरिटी भी है? 'है', ये नहीं कहा 'होगा'। ये भी नहीं कहा- परमधाम में सर्व शक्तियों की अथॉरिटी था। (किसी ने कहा- नहीं) तो जो सर्वशक्तिवान है और सर्व शक्तियों की अथॉरिटी भी

है, ऊपर परमधाम में है या इस सृष्टि में है? (किसी ने कहा- इस सृष्टि में) सर्वशक्तिमान भी है, अथॉरिटी भी है और वो शक्ति किस चीज़ की है उस पतित-पावन में? उस पतित-पावन में कौन-सी चीज़ है, जो शक्ति है? (किसी ने कहा- पवित्रता की शक्ति) शास्त्रों में विषपायी गाया हुआ है या अमृतपायी गाया हुआ है? (किसी ने कहा- विषपायी) फिर पतितों को पावन बनाने वाला है? (किसी ने कहा- है) अरे, विष पीने वाली आत्मा अलग और निर्विष बनाने वाला अलग। एक में ही दो आत्माएँ हैं या एक ही प्रकार की आत्माएँ हैं? दो आत्माएँ हैं।

तो पतित से पावन करने की शक्ति है। जो पतित बन गए हैं, उन पतितों को या जिसमें प्रवेश किया है, जो पतिततम कामी-काँटा है, उसको भी पतित से क्या बनाने की शक्ति है? पावन बनाने की शक्ति है। अब ये निराकार को शक्ति है। ये शक्ति किसको है? निराकार को है पतित आत्माओं को पावन बनाने की शक्ति, है या नहीं? (किसी ने कहा- है) और वो निराकार है किसमें? कोई साकार में मुकर्रर रूप से है। निराकार आत्माओं को, जो आत्माएँ भी निराकार हैं, उनको क्या करेंगे? जो जैसा है, वैसा ही बनाएगा या कुछ और बनाएगा? (किसी ने कहा- वैसा ही बनाएगा) डकैत है, तो डकैतों को क्या बनाएगा? जो संग में आवेंगे, उनको डकैत बनावेगा। चोर, चोर बनावेगा; भक्त, भक्त बनावेगा। तो निराकार आत्माओं को क्या करेंगे- निराकारी बनावेंगे या नहीं बनावेंगे? आत्माओं को निराकार बनावेंगे। अरे! आत्माएँ निराकार होती हैं या साकार होती हैं? आत्माएँ तो सब निराकार ही होती हैं, फिर निराकार बनाने की क्या बात है? (किसी ने कहा-निराकारी स्टेज की बात है) हाँ! निराकारी होती तो हैं; लेकिन पक्की पहचान तब होती है, जब साकार में, जो साकार की प्रबल इन्द्रिय 'कामेन्द्रिय' है, वो कामेन्द्रिय उस भोग के संबंध में जब आती है, तब पता चलता है कि निराकार है या साकार है। अनुभव करने की चीज़ है या बिना अनुभव करने की चीज़ है? अनुभव करने की चीज़ है। उस समय निराकारी स्टेज रहती है? नहीं रहती। अगर रहती होती तो देवताओं की वो इन्द्रिय पूजी जाती। और सभी जो देवताएँ हैं, एक को छोड़ करके, उनकी इन्द्रिय 'कामेन्द्रिय' पूजी जाती है? (किसी ने कहा- नहीं) उनकी और इन्द्रियाँ पूजी जाती हैं- कमल नयन, हस्त कमल, पाद कमल; लेकिन लिंग सिर्फ एक का ही पूजा जाता है और पूजा साकार की होती है या निराकार की होती है? साकार की होती है; निराकार की तो पूजा होती ही नहीं। निराकार बाप, आत्माओं का बाप तो कहते हैं- न मैं पूजा करता हूँ, न पूजा लेता हूँ। ''मैं न पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ।'' (मु.ता. 22.05.71 पृ.1 अंत) जो पूजा करते हैं, वो पूजा लेते भी हैं। तो कौन है, जिसकी शिव के मंदिरों में, जो सार्वभौम मंदिर है- शिव का मंदिर, सारी दुनियाँ में उसकी पूजा दिखाई जाती है? वो साकार है या निराकार है? है तो साकार; लेकिन जब तक शिव समान निराकारी स्टेज न दिखाई जाए, तब तक उसकी पूजा नहीं हो सकती।

तो क्या समझाएँगे? कोई को टेपरिकॉर्डर ले जा करके बाप की वाणी सुनाएँगे, तो क्या समझाएँगे? अरे! क्या कहेंगे? कुछ कहेंगे या टेपरिकॉर्डर सुना करके टब्ब होकर बैठ जावेंगे! कुछ पूछेंगे, बताएँगे या नहीं बताएँगे? (किसी ने कहा- बताएँगे) क्या पूछेंगे? (किसी ने कहा- बाप आए हैं, कलियुग के अंत में शिवबाप आते हैं।) शिवबाबा आए हैं? कहाँ से आए हैं? क्या फर्रुखाबाद/बम्बई से आए हैं? (किसी ने कहा- ज्ञान के आधार पर समझाएँगे) ज्ञान के आधार पर क्या चीज़ समझाएँगे? मान लो, कोई ब्रह्माकुमार आ गया, उसको क्या समझाएँगे? (किसी ने कहा- बाप की पहचान बताएँगे) वो तो उसने जान ली- मैं आत्मा, मेरा बाप शिव ज्योतिबिंदु। (किसी ने कहा- मुकर्रर रथ की बात) हाँ, ये समझाएँगे कि वो पर्टिकुलर मुकर्रर रथ कौन-सा है। मुकर्रर माना आदि में भी, मध्य में भी और अंत में भी इस सृष्टि पर कायम रहता है। वो इस सृष्टि पर सदा कायम रहता है। भल पहचानने में न आवे, तो भी वो आत्मा, जो शिवबाबा का मुकर्रर पार्टधारी है, वो सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग में भी इस सृष्टि पर मौजूद रहता है या नहीं

रहता है? रहता है; परंतु कोई उसे जानता नहीं है। वो जानकारी हम आपको दे रहे हैं। वो जानकारी देने के लिए ही परमपिता परमात्मा शिव ज्योतिबिंदु को इस सृष्टि पर आना पड़ता है। वो निराकार है। आत्माओं का बाप निराकार है। निराकार क्या देने आता है- लड्डू-पेड़ा, धन-सम्पत्ति, महल-माड़ियाँ? क्या देने आता है? (किसी ने कहा- ज्ञान देते) हाँ! निराकार से निराकार ज्ञान मिलता है। वो निराकार ज्ञान ही देता है और उस ज्ञान को जो नंबरवार धारण करते हैं, वो योग में भी उतने ही तीखे जाते हैं। 'ज्ञान' माने जानकारी। किस बात की जानकारी? उस सच्चाई की जानकारी, उस सत्य की जानकारी, जो इस सृष्टि पर सदा सत् है, सत् ही था, सत् ही है और सत् ही रहेगा और सत् की ही विजय होगी। झूठ तो भाग खड़ा होता है, कितना भी पावरफुल हो। जितने भी विदेशी आक्रांताएँ आए लाखों-2 की सेना ले करके, आखरीन वो भाग खड़े हुए या ठहरे रहे? (किसी ने कहा- भाग खड़े हुए) क्यों? झूठ के पाँव होते ही नहीं। अडिग कौन होता है? सत् ही अडिग है। तो जो सत्य है, चारों युगों में सत्य है, रंगमंच पर चारों ही सीन में सत्य है और सत्य के आधार पर सदैव टिका रहा है, कभी उसकी हार हिस्ट्री में हुई ही नहीं है, कोई युद्ध में उसकी हार हुई ही नहीं है, उस सत्य का परिचय देने के लिए परमपिता परमात्मा शिव निराकार को इस सृष्टि पर आना पड़ता है। उस सत्य का परिचय नहीं दिया और दुनियाँ भर की काँय-4 करते रहे, मेले किए, मलाखड़े किए, कॉन्फ्रेन्स की, प्रदर्शनी की, ये किया, वो किया और जिसकी पहचान देनी है वो पहचान नहीं दे सके, तो अपना और दूसरों का कल्याण किया? नहीं किया।

तो बाप कहते हैं- क्या समझाएँगे? पूछते हैं- समझने वालों को क्या कहेंगे? बच्चे! ये एक बात समझाने के सिवाय, उस एक का परिचय देने के सिवाय, जिसमें मुकर्रर रूप से आत्माओं का बाप प्रवेश करता है, बच्चे और कोई युक्ति है? (किसी ने कहा- नहीं है) गंगा का परिचय देंगे, यमुना का परिचय देंगे? गंगा तो पतित-पावनी गाई हुई है, तो उसका परिचय देने से पतित से पावन नहीं बनेंगे? नहीं बनेंगे। क्यों? क्योंकि बोला है- नदियों का कनेक्शन, नदियों का संबंध; और संबंध इन्द्रियों के द्वारा जोड़े जाते हैं या बिना इन्द्रियों के संबंध जोड़े जाते हैं? (किसी ने कहा- इन्द्रियों के द्वारा) तो चैतन्य गंगा-यमुना नदियाँ उस परमपिता-परमात्मा शिव से, जो चैतन्य में मुकर्रर रूप से इस सृष्टि पर आया हुआ है, उससे संबंध जोड़े बग़ैर वो पतित-पावन का कार्य नहीं कर सकतीं और पतित-पावनी के रूप में नहीं गाई जा सकतीं। गंगा भी तब गाई जाती है, जब उस एक से उसका कनेक्शन हो, संबंध जुटे। संबंध नहीं है, तो वो नदी नहीं है; नाला है। ढेर-के-ढेर नालों से उसका कनेक्शन रहता है, वो पतित-पावनी कैसे हो सकती है! तो समझाने वाले को ये समझ भी चाहिए कि हमने टेपरिकॉर्डर तो ले लिया, दूसरों को सुनाने भी जाते हैं, तो जो बात समझानी है, वो समझाए पाते हैं? (किसी ने कहा- नहीं)

समझ भी चाहिए। बस, वो समझ बरोबर शास्त्र में लिखा हुआ है- मन्मनाभव अर्थात् मुझे याद करो। कौन कहता है? (किसी ने कहा- बाप) ब्रह्माकुमारियाँ क्या समझती हैं- मन्मनाभव का अर्थ? मुझ बिंदी को याद करो। अरे! बिंदी कैसे कहेगी? बिंदी कहेगी? (किसी ने कहा- नहीं कहेगी) जैसे निराकार आत्मा साकार शरीर धारण किए बग़ैर कोई कार्य नहीं कर सकती, ऐसे निराकार आत्माओं का बाप, निराकार शिव ज्योतिबिंदु शरीर धारण किए बग़ैर कुछ भी मुख से नहीं कह सकता; क्योंकि उसको मुख है ही नहीं। वो कहते हैं- 'मन्मनाभव'- मुझे याद करो, मेरे मन में समा जाओ। 'मत्' माने मेरे, 'मना' माने मन में, 'भव' माने समा जा; मेरे मन में कैसे समा जाए? माना जो मेरे मन के अंदर संकल्प हैं, वो ही संकल्प तेरे अंदर चलें; एक भी क्रॉस करने वाला संकल्प न पैदा हो। अभी क्रॉस करने वाले संकल्प पैदा होते हैं या नहीं होते है? (किसी ने कहा-होते हैं) ये संकल्पों रूपी खून जो क्रॉस करता है, वो कहाँ से आया? एक बाप से आया? (किसी ने कहा- संग के रंग से) अनेकों धर्मपिताओं का संग का रंग लिया, उनके फॉलोअर्स का

संग लिया भारतवासियों ने, दूसरे धर्म में कन्वर्ट हो गए और कन्वर्ट हो करके उनके संकल्पों का खून लेते रहे, जन्म-जन्मांतर लेते रहे। अंतिम जन्म में जब भगवान बाप आते हैं, तो हर धर्म से उन्हीं आत्माओं को उठाते हैं, जो सृष्टि के आदि में ब्राह्मण सो देवता बनी थीं नंबरवार, नौ कुरी के ब्राह्मण बने थे। जो अव्वल नंबर कुरी के सूर्यवंशी ब्राह्मण बने थे, वो ज्ञान-सूर्य के संकल्पों को पकड़ते हैं। दिन के सितारे अपनी ज्ञान की रोशनी को, संकल्पों की रोशनी को, सूर्य की रोशनी में तिरोहित कर देते हैं या नहीं कर देते हैं? (किसी ने कहा- कर देते हैं) अलग से रोशनी छोड़ते हैं? (किसी ने कहा- नहीं) अब जो अलग से प्रश्न, दुनियाँ भर के संकल्पों का कचड़ा इकट्ठा करके लाते हैं, वो और-2 संकल्पों का खून कहाँ से आया? क्या साबित होता है? कहाँ से आया? भारतवासी देवता धर्म की आत्माएँ ही और-2 धर्मों में कन्वर्ट होती रही हैं; लेकिन कच्चे ब्राह्मण सो देवता बनने वाले कन्वर्ट होते रहे हैं या पक्के सूर्यवंशी बनने वाले ब्राह्मण कन्वर्ट हुए हैं? (किसी ने कहा- कच्चे) उनकी परसेण्टेज कितनी है? 80-90 परसेण्ट ब्राह्मण सो देवता बनने वाले और-2 धर्मों में कन्वर्ट होते रहे हैं, उनका संग का रंग लिया है। तो उनको अनेक प्रकार के क्रॉस करने वाले संकल्पों का खून परेशान करता है। बाप का जो खून है, वो कैसा होगा? 'ओ' ग्रुप वाला होगा, जो सबको लगेगा या कोई को लगेगा या नहीं लगेगा? (किसी ने कहा- सबको लगेगा) बाप का जो खून होगा, वो सबको असर करेगा; सूर्यवंशियों को ज़्यादा असर करेगा। जो और-2 ग्रुप वाले हैं, उनको रिफॉर्म होने में टाइम लगेगा या नहीं लगेगा? टाइम लग जाता है।

तो पूछा- क्या समझाएँगे, क्या कहेंगे? बोलो बच्चे, कोई और युक्ति है? वो बरोबर शास्त्र में लिखा हुआ है- मन्मनाभव। मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जावेंगे। वो युक्ति बताते हैं कि अभी तुम तमोप्रधान बन गए हो, तो क्या करो? (किसी ने कहा- याद करो) जो एक्स, वाई, ज़ेड मिले उसी को याद करने लग पड़ें? बंगाली रसगुल्ला मिले, खाने को मिले, वो भी याद करें, देशी रसगुल्ला मिले वो भी याद करें। अनेक प्रकार को याद करें या एक को याद करें? (किसी ने कहा- एक को याद करें) बाबा को याद करो। जैसे- माँ होती है, बच्चा विदेश चला जाता है या बच्चा नानी के घर चला जाता है, तो माँ उसकी बातों को याद करती है या नहीं करती है? तोतली बातें याद आती हैं कि नहीं? याद आती हैं। तो यहाँ भी तुम बाबा के महावाक्यों को याद नहीं करेंगे? (किसी ने कहा- करेंगे) वो तो दुनियावी बच्चे, देह के बच्चे हैं और तुम तो रूहानी बच्चे हो। तुम जो रूहानी बच्चे हो, तो तुम्हारी रूह तो मनन-चितन-मंथन वाली होगी या विपरीत मंथन वाली होगी? (किसी ने कहा- मनन-चितन-मंथन वाली) तुम्हारी जो बुद्धि रूपी आत्मा है, उसमें तो बाप ने क्या बोला, वो ही बातें याद आएँगी ना! कि विधर्मियों की बातें याद आएँगी? (किसी ने कहा- बाप की) बाप की बातें याद करें। तो याद करो।

याद करते-2, सतोप्रधान बन करके, अपने सतोप्रधान बाप के पास सतोप्रधान निराकारी दुनियाँ में चले जावेंगे, सत्वप्रधान निराकारी दुनियाँ में चले जावेंगे। कहाँ है निराकारी दुनियाँ? कहाँ चले जावेंगे? (किसी ने कहा- बाप के पास) उस स्थान का, धाम का कोई नाम है? (किसी ने कहा-परमधाम) तो कहाँ है परमधाम? सूरज-चाँद-सितारों की दुनियाँ के पार नहीं है? सूरज-चाँद-सितारों की दुनियाँ के पार का मतलब ये है कि जो स्थूल सूर्य है, उसके भी पार, वो सौर-मण्डल के पार और उस सौर-मण्डल में जो रात में चमकने वाले सितारे हैं, उनके भी पार। दिन में चमकने वाले सितारे तो होते ही नहीं। उन्होंने तो अपने संकल्पों रूपी रोशनी को क्या कर दिया? (किसी ने कहा- मर्ज कर दिया) उनकी तो बात ही नहीं। बाकी चाँद के पार क्रॉस करेंगे या नहीं करेंगे? चाँद माने ज्ञान-चन्द्रमा कौन? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा) उसके संकल्पों को क्रॉस करेंगे या नहीं करेंगे? उनके संकल्पों को भी क्रॉस कर जावेंगे और कहाँ चले जावेंगे? (किसी ने कहा- परमधाम) बाप के पास। कैसा बाप- सत्वप्रधान या रजोप्रधान या तामसी?

(किसी ने कहा- सत्वप्रधान) तो कहाँ- ऊपर या नीचे? (किसी ने कहा- नीचे) माने ऊपर कोई परमधाम नहीं होता? (किसी ने कहा- नहीं होता) होता तो है; लेकिन आत्मा निराकारी धाम में निराकारी बनने के बाद जाएगी; इस शरीर से नहीं जा सकती। इस शरीर से, जो साकारी परमधाम है; जिस साकारी परमधाम को तुम बच्चे इस साकारी सृष्टि पर उतार लेंगे; उतारेंगे या नहीं उतारेंगे? उतार लेंगे। जिस साकारी परमधाम में वो ही आत्माएँ पहुँच पाएँगी, जो निराकारी स्टेज में टिकी हुई होंगी। ये ब्राह्मणों का संगठन ऐसा निर्विकारी बन जावेगा, जो कोई भी विकारी आत्मा वहाँ पाँव रख ही नहीं सकेगी। ''यह किला ऐसा बन जावेगा जो कोई भस्मासुर अंदर आ न सके।'' (मु.ता. 2.5.73 पृ.2 मध्यांत) कोई भी देह-अभिमान वाला होगा, वो वहाँ जाय ही नहीं सकेगा। ऐसा तुम्हारा रूहानी संगठन, रूहानी मिलेट्री बन जावेगी। यादगार भी है, मिलेट्री का कैम्प जहाँ होता है, बाहर के आदमी प्रवेश करते हैं? नहीं कर पाते।

तो तुम निराकारी दुनिया में चले जावेंगे। देखो, ये समझने और समझाने की कितनी सहज बात है! समझने की भी है और किसी को समझाने की भी है। अच्छा, फिर आओ इन चित्रों पर। त्रिमूर्ति का चित्र तो समझाया, उसमें किसका परिचय दिया? एक बाप का परिचय पहले देना है। किसका परिचय दिया? शिवबाबा का परिचय दिया ना! तो शिवबाबा का जो परिचय दिया, वो सम्पन्न स्टेज का परिचय देना है या अधूरी स्टेज का परिचय देना है? (किसी ने कहा- सम्पन्न स्टेज का) सम्पन्न स्टेज क्या होती है? अव्यक्त स्टेज को सम्पन्न स्टेज कहेंगे या साकारी स्टेज को सम्पन्न स्टेज कहेंगे? हम बच्चों को जो डायरैक्शन मिला है- ''अभी-2 साकारी, अभी-2 आकारी, अभी-2 निराकारी।'' (अ.वा.24.12.79 पृ.144 अंत) एक सेकेण्ड में निराकारी, फिर दूसरे सेकेण्ड में साकारी। जो साकारी प्रबल इन्द्रिय है, उसमें भी टिक जाएँ; लेकिन बाप की याद में। कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हुए बाप को याद करना है या नहीं करना है? (किसी ने कहा-करना है) तो कर्म करते कर्मेन्द्रियों से निराकारी बाप को याद करना है या साकारी बाप को याद करना है? निराकारी बाप को याद करना है और साकार में आए हुए निराकार को याद करना है या अकेले साकार को याद करना है या अकेले निराकार को याद करना है या अकेले आकारी को याद करना है? साकार में आए हुए निराकार को याद करना है।

तुम सतोप्रधान निराकारी दुनिया में बाप के पास चले जावेंगे। बातें कितनी सहज और समझाने की हैं सहज। तो अभी इन चित्रों पर आओ और बतलाना चाहिए- भगवान तो एक है ना! किन चित्रों पर आओ? त्रिमूर्ति के चित्र में ही बताया, चार चित्र दिए हुए हैं। ऊँच-ते-ऊँच है अव्यक्त-मूर्ति और नीचे वाली हैं साकार मूर्तियाँ और आकारी मूर्तियाँ। साकारी सो आकारी। तो बताना चाहिए, इन सभी मूर्तियों में भगवान एक है या ये चार-2 हैं? (किसी ने कहा- एक ही है) कौन? (किसी ने कहा- ऊपर वाली) जो ऊपर वाली अव्यक्त-मूर्ति जिसे कहा जाता है, मूर्ति भी है, मूर्त रूप भी है, अमूर्त नहीं है। क्या है? मूर्त माने साकार रूप भी है; जो देखने में आता है उसे कहते हैं- मूर्त और जो देखने में नहीं आता है उसे कहते हैं- अमूर्त। जो देखने में आता है उसे कहते हैं- व्यक्त और जो देखने में नहीं आता है उसे कहते हैं- अव्यक्त। तो भगवान एक है, ये चार-2 मूर्तियाँ भगवान नहीं हैं। ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त एक है। तो कौन हुआ? कौन-सी मूर्ति की तरफ इशारा करेंगे? किसकी मूर्ति की तरफ इशारा करेंगे? (किसी ने कहा- अव्यक्त-मूर्ति की तरफ) ऐसे तो ईश्वरीय ज्ञान की बेसिक नॉलेज लेने वाले बच्चे भी जब प्रदर्शनी करते हैं, तो पहले 32 किरणों वाला निराकार का चित्र रख देते हैं; क्योंकि बाप ने कहा- पहले बाप का परिचय दो। तो क्या बाप का परिचय हो जाता है? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों नहीं हो जाता? क्योंकि वो निराकार ज्योतिबिन्दु जब तक साकार में प्रवेश करके इन 32 गुणों को प्रैक्टिकल में धारण न करे; गुण और अवगुण साकार सृष्टि पर होते हैं या निराकारी दुनियाँ में होते हैं? (किसी ने कहा-साकार सृष्टि पर) तो जो लिग के 32 गुण दिखाए गए हैं, वो साकारी की यादगार हैं, साकार सो

निराकार की यादगार हैं या सिर्फ निराकार की यादगार हैं? साकार सो निराकार कम्बाइण्ड की यादगार हैं। तो उसको कहा जाता है- ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त। उस ऊँचे-ते-ऊँचे के मंदिर भी ऊँचे स्थान पर बनाए जाते हैं या गड्ढे में बनाए जाते हैं? ऊँचे स्थान पर बनाए जाते हैं। गाँव में भी बनाएँगे तो भी ऊँचा स्थान देखेंगे, शहर में भी बनाएँगे तो भी ऊँचा स्थान देखेंगे; नहीं तो पहाड़ों पर बनाते हैं।

ये ही देखो, ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है। बाबा कहते हैं- इनके ऊपर ही बड़ी समझानी है। इनके, इसके ऊपर नहीं कहा। ''इसके ऊपर ही बड़ी समझानी है''- ऐसे कहा? क्या कहा? ''इनके ऊपर ही बड़ी समझानी है।'' माना एक के लिए बोला या अनेक हैं? (किसी ने कहा-अनेक हैं) अनेक कितने? (किसी ने कहा- चार हो गए ना!) अव्यक्त-मूर्ति लिंग की ओर इशारा करेंगे त्रिमूर्ति में, तो उसमें चार हैं? (किसी ने कहा- दो हैं) (किसी ने कहा- ब्रह्मा सो विष्णु बन जाता है ना!) नहीं-2, ब्रह्मा तो दादा लेखराज ब्रह्मा भी है और परम्ब्रह्म भी ब्रह्मा ही है; लेकिन 'इनके' जब कहा है, तो अनेक आत्माओं की तरफ इशारा किया या एक की तरफ इशारा किया? अनेक आत्माएँ हैं, उनकी तरफ इशारा किया। बाबा ने ये चित्र इतना बड़ा क्यों बनाया है? त्रिमूर्ति में भी शिवलिंग का चित्र इतना बड़ा क्यों? भक्तिमार्ग में भी, मंदिरों में या वैसे भी बड़े-2 लिंग बनाते हैं या छोटा ही बनाकर छोड़ देते हैं? रुद्र-यज्ञ रचते थे तो बड़ा लिंग बनाते थे या छोटे-2 बनाते थे? एक बड़ा बनाते थे और बाकी सब छोटे-2 सालिग्राम बनाते थे। तो इस चित्र को इतना बड़ा क्यों बनाया? कि झट आ करके उस चित्र पर समझावें कि भई! ऊँचे-ते-ऊँचा ये भगवन्त है। तीन की ओर इशारा करो- ये ऊँचे-ते-ऊँचे नहीं, ये ऊँचे-ते-ऊँचे नहीं, ये ऊँचे-ते-ऊँचे नहीं। इनकी जयंती 'वर्थ नॉट ए पैनी', इनकी जय-जयकार 'वर्थ नॉट ए पैनी', इनकी प्रत्यक्षता की कोई कौड़ी की भी कीमत नहीं। किसकी प्रत्यक्षता की कीमत है? जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त है, उसका प्रत्यक्षता रूपी जन्म जब होता है, जिसकी यादगार है- 'महाशिवरात्रि'। महान माने बड़े-ते-बड़ी। सारे कल्प में इतनी बड़ी अंधकार की रात्रि न कभी हुई है, न भविष्य में कभी होगी, जैसी ये बड़ी-ते-बड़ी महान शिवरात्रि अब 2027-28 में होने वाली है।

तो जानते हो ना, ये देखो भगवन्त है! ये बाबा है ना, सबसे बड़ा बाबा! दुनियाँ में जितने बाबाएँ हुए हैं, उन सब बाबाओं से सबसे बड़ा बाबा ये है, सब आत्माओं का बाप। अच्छा, अभी ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त को हमको वो स्वर्ग का वर्सा देना है; क्योंकि वो नई दुनिया स्थापन करने वाला है। नई दुनिया स्थापन करने वाला है या सन् 1966 में स्थापन कर दी थी? (किसी ने कहा- करने वाला है) तो मुरली में कब इशारा दिया कि नहीं? (किसी ने कहा- दिया) कब स्थापन करने वाला है? पढ़ाई कब पूरी होती है? (किसी ने कहा- 40 से 50 वर्ष) पढ़ाई पूरी होती है 40 से 50 वर्ष में और पढ़ाई है एक को पहचानने की; कि कुछ और पढ़ाई है? पढ़ाई क्या है? एक मुकर्रर रथ को पहचानने की पढ़ाई है और वो पढ़ाई में आज निश्चयबुद्धि और कल अनिश्चयबुद्धि होता है कि नहीं? (किसी ने कहा- होता है) तो पढ़ाई पूरी हुई? (किसी ने कहा- नहीं हुई) पढ़ाई तो पूरी नहीं हुई और सबके अंदर कुछ-न-कुछ ऐसा होता है- आज निश्चयबुद्धि और कल सुनी-सुनाई बातों से भारतवासियों ने दुर्गति पा ली, अनिश्चयबुद्धि हो जाती है।

तो बताया कि नई दुनिया स्थापन करने वाला ये है। उस मूर्ति की तरफ खास इशारा करो और ये बाबा है। बाबा की भी परिभाषा क्या बताई? साकार और निराकार के मेल को 'बाबा' कहेंगे। ''अशरीरी और शरीरधारी का मिलन है। उनको तुम कहते हो 'बाबा'।'' (मु.ता.9.3.89 पृ.1 मध्य) तो साकार ब्रह्मा बाबा दादा लेखराज और निराकार ज्योतिबिंदु, तो बाबा नहीं हुआ? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों? (किसी ने कहा- माँ का पार्ट चला) तो माँ भी कहो, दादी कहो, बाबा क्यों कहते हो? वो तो शरीर छोड़ दिया ना! जो हो चुका है, जो पास्ट हो गया, उसको याद करना है या जो वर्तमान प्रैक्टिकल में संगमयुग में है, उसको याद करना है? वो आया है और काम पूरा कर दिया है या

नहीं कर दिया है? काम पूरा कर गया? काम तो चल रहा है ना! भक्तिमार्ग में भी कहते हैं कि जो आत्मा कोई कार्य को हाथ में ले ले और अधूरा छोड़ करके भाग जाए, वो श्रेष्ठ आत्मा है या निष्कृष्ट आत्मा है? (किसी ने कहा- निष्कृष्ट आत्मा) श्रेष्ठ कौन है? जो कोई कार्य का बीड़ा उठावे और उस कार्य को पूरा ही करके छोड़े। तो दादा लेखराज का जो साकार स्वरूप है, जिसमें निराकार तो भल आया; लेकिन सिर्फ निराकार वाणी का वर्सा दिया; कि साकार में विश्व की बादशाही दे दी? साकार में तो नहीं दे दी। साकार में किसी का प्रैक्टिकल में पार्ट प्रत्यक्ष हो गया? नहीं हुआ। वो पार्ट माला के रूप में, माला रूपी संगठन के मणकों के रूप में अभी प्रत्यक्ष होने वाले हैं या हो गए? (किसी ने कहा- होने वाले हैं) तो वो नई दुनिया स्थापन करने वाला है; जो शरीर छोड़ करके चला गया, वो रूप नहीं। जो स्वरूप अभी भी है और आगे भी नई दुनिया स्थापन करने तक रहेगा, वो ही बाबा है, साकार और निराकार का मेल है। वो अगर नहीं है, तो बताओ भला क्या है? किसी की दृष्टि में कोई है तो बताए कि वो कौन है नई दुनिया स्थापन करने वाला? चलो, ढेर-की-ढेर विष्णु पार्टी वाले हों, वो बताएँ कि वो बाबा नहीं है, तो बताओ, कौन-सा बाबा है? अगर तुम अपन को कहते हो- मैं बाबा हूँ, तो फिर समझाओ हमको। अधूरा ज्ञानी होगा तो उनकी बातों के चंगुल में आएगा या जिसको बाप का पूरा ज्ञान मिला होगा, वो चंबे में आएगा? अधूरा ज्ञानी होगा तो चंबे में आ जाएगा। बाबा देंगे ही स्वर्ग की बादशाही। कौन-से 'ग' की बादशाही? स्वः+ग। 'ग' माने गया, 'स्व' माने स्व-स्थिति में गया। तो स्व-स्थिति में जाने वाला कोई तो एक पुरुषार्थी होगा, जो पहले-2 अव्वल नंबर में स्व-स्थिति में जाए! वो अपनी नई दुनियाँ बनाएगा या कोई दूसरा बनाएगा- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि? अपनी नई दुनिया कौन बनाएगा? अपने स्वरूप को सम्पूर्ण रूप से पहचानने वाला बनाएगा या अपने को ही न पहचानने वाला बनाएगा? (किसी ने कहा- अपने को पहचानने वाला)

तो वो बाबा ही स्वर्ग की बादशाही देंगे, जो स्व-स्थिति में पहले-2 जाता है और कौन-सी बादशाही? घनेरे सुख की बादशाही। ये क्या होता है? त्रेता में नहीं मिलेंगे? मिलेंगे तो; लेकिन 14 कला। सतयुग में घनेरे सुख नहीं मिलेंगे? मिलेंगे; लेकिन 16 कलाओं में बँधे हुए मिलेंगे; कलातीत सुख नहीं मिलेंगे। हम कौन-से बाप के बच्चे हैं? कलातीत ज्ञान-सूर्य के बच्चे हैं। सूर्य को कभी कलाओं में नहीं बाँधा जा सकता। हमारे घनेरे सुख ऐसे होंगे, जो देवताओं के सुख से भी ऊँचे होंगे। कैसे? देवताओं के सुख इन्द्रियों के सुख होंगे, ज्ञान-इन्द्रियों के सुख होंगे या वायब्रेशन के सुख होंगे? उनके ज्ञान-इन्द्रियों तक ही सीमित सुख होंगे। हमारे सुख घनेरे कैसे होंगे? ज्ञान-इन्द्रियों से भी परे वायब्रेशन का सुख होगा। इन्द्रियों से भी परे क्या होता है? मन, और मन से भी परे? (किसी ने कहा- बुद्धि) तो जो हमें सुख मिलेगा, वो मन रूपी बैल या ब्रह्मा या घोड़ा से मिलेगा या उसके ऊपर सवार होने वाले से मिलेगा? उसके ऊपर भी सवार होने वाले से मिलेगा, जो दिखाते हैं- बैल पर शंकर सवार हुआ और शंकर पर शिव सवार होता है। बैल के ऊपर भी शिव का गुम्मड़ दिखाते हैं कंधे पर, तो उसे शंकर क्यों नहीं कहते? बैल जो है, वो समझ नहीं सकता; ज्ञान की गहराई को बैल जानवर रूपी ब्रह्मा समझेगा? नहीं समझेगा। कौन समझेगा? (किसी ने कहा- मनुष्य) तो जो सदा अड़ियल बैल है, उसको कण्ट्रोल करना सबके बस की बात नहीं है। उसे कण्ट्रोल करना, दिखाया गया है जो मन अड़ियल है, कैसा अड़ियल? गीता में क्या बोला अर्जुन को? अर्जुन ने क्या कहा? हे भगवान! ये मन बड़ा अड़ियल है, कण्ट्रोल में आने वाला नहीं है, इसे कैसे कण्ट्रोल में लाया जाए? तो बताया- बार-2 अभ्यास करो। क्या अभ्यास करो? वो अभ्यास करो, जो अभ्यास करना दुनियावी मनुष्यों के लिए तो बहुत कठिन है और तुम ब्राह्मण सो देवता बनने वालों के लिए सहज है। क्या? कि जो तीव्रतर इन्द्रिय है- कर्मेन्द्रिय, उस कर्मेन्द्रिय (कामेन्द्रिय) के युद्ध में तुम ऐसी बार-2 स्मृति का अभ्यास करो कि 63 जन्मों के संस्कार होने के कारण, उस इन्द्रिय का सुख लेने के कारण, जो पक्की आदत बन चुकी है उस इन्द्रिय का जन्म-जन्मांतर जानवरियत का सुख लेने की, वो हिंसक सुख बाबा की याद में लेना

बंद करो। बार-2 बुद्धि नीचे जाएगी, बार-2 बुद्धि को नीचे से कहाँ लाओ? भृकुटि के मध्य में ऊपर ले जाओ। ये ही बात गीता में बताई- ''उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।'' (गीता 6/5) 'उत्' माना 'ऊपर', 'हरेत्' माना हरण करके ले जाओ। ज़बरदस्ती करनी पड़ेगी? मन-बुद्धि को ऊपर ले जाने के लिए क्या करना पड़ेगा? ज़बरदस्ती ऊपर ले जाने का अभ्यास करना पड़ेगा। वो फिर नीचे चली जाएगी, तो फिर क्या करना पड़े? फिर ऊपर ले जाओ, फिर नीचे जाए फिर ऊपर जाओ। जैसे साइकिल पर सवार होने वाला बार-2 गिरता है और बार-2 चढ़ जाता है, तो हारा हुआ माना जाएगा या नहीं माना जाएगा? (किसी ने कहा- नहीं माना जाएगा) 'हिम्मत हारे तो हार' और 'हिम्मते बच्चे तो मददे बाप' बन जाएगा। तो अंतिम विजय तुम दो बच्चों आदि ल.ना. की है। 'हारिये न हिम्मत, बिसारिये न राम', पहली बात और ये अभ्यास पक्का कैसे होगा? ''अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।'' (गीता 6/35) वि+राग- 'वि' माने विपरीत, 'राग' माने प्यार= प्यार के विपरीत। जन्म-जन्मांतर प्यार किससे किया- देहधारियों से या ज्योतिबिंदु आत्माओं-परमात्मा से? (किसी ने कहा- देहधारियों से) तो उन देहधारियों को, सबको क्या करो? (किसी ने कहा- प्यार न करो) हाँ, उनसे प्यार न करो। यही फ़ाइनल पेपर है- नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। काहे से नष्टोमोहा? अपनी देह से नष्टोमोहा, देह के संबंधियों से नष्टोमोहा और देह के पदार्थों से भी नष्टोमोहा। महल-माड़ियाँ-अटारियाँ, हवाई जहाज कोई में मोह नहीं। नो अटैचमेण्ट, कोई लगाव नहीं। अटैचमेण्ट ही हट जाए तो क्या कहेंगे? साक्षी द्दष्टा। जैसे शरीर अलग पड़ा हुआ है और आत्मा अलग से देख रही है कि ये शरीर मुर्दा पड़ा है, इससे हमारा कनेक्शन नहीं है। ऐसी वैराग्य वृत्ति को धारण करना है। जब महामृत्यु का टाइम आएगा, ये पदार्थ हमारे काम नहीं आएँगे, ये देह भी हमारे काम नहीं आवेगी। क्या कहा? शरीर सड़ते जावेंगे। देह के संबंधी चौकड़ी मारकर भाग जाएँगे। जैसे द्वितीय विश्वयुद्ध के टाइम ब्राह्मणों की दुनिया में भी, महीनों-2/वर्षों-2 जिन देह के संबंधियों ने उन तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियों को 7-7 तालों के अंदर बंद करके रखा था, जब सन् 1947 का हिंदुस्तान-पाकिस्तान का, खून की नदियाँ बहाने वाला युद्ध हुआ तो चौकड़ी मार करके भाग गए। देह के संबंधी, जो इतना प्यार दिखा रहे थे, वो प्यार दिखाने वाले काम आए? नहीं आए।

तो बाप कहते हैं- ये नई दुनिया स्थापन करने वाले साकार+निराकार बाबा को याद करो, जो स्वस्थिति में ले जाने का, देवताओं की तरह जो सदा स्वस्थिति में रहते हैं, ऐसा पुरुषार्थ कराने वाला है, घनेरे सुख की बादशाही देने वाला है। सतयुग से भी जो ऊँचा सुख है, 16 कला सम्पूर्ण का सुख, उससे भी ऊँचा अत्तीन्द्रिय सुख देने वाला है। जिस सुख में, जिन्होंने तुम्हें जन्म-जन्मातंर दुख दिया है, तुम्हें पता चल जावेगा कि जन्म-जन्मांतर के ये दुश्मन हमारे कौन हैं, जिन्होंने हमको बरगलाय-2 कर, झूठी बातें सुनाय-2 कर नीचे गिराया है। ऐसे तो गलती हमारी ही है। क्या गलती है? एक से सुनना चाहिए। ''मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।'' (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) तो द्वापरयुग से हम जानते हैं कि द्वापरयुगी-कलियुगी भक्तिमार्गीय दुनिया में वो एक कौन है, जो सबसे जास्ती ज्ञानी माना जाता है। जिसका नाम असल में 'भारत' है । 'भा' माने 'ज्ञान की रोशनी', 'रत' माने 'लगा रहने वाला'। जो थ्योरीज़ के हिसाब से भी ज्ञान की रोशनी में ही लगा रहता है। शास्त्र बना करके, शास्त्र सुना करके, शास्त्र का मनन-चितन-मंथन करके, सत्वप्रधान द्वापरयुग में गीता शास्त्र की रचना करके; क्या कहा जाता है गीता में? किसकी प्रसन्नता से हमें गीता-ज्ञान मिला? ''व्यास प्रसादात्।'' (गीता-18/75) वो पहला सत्वगुणी शास्त्र है; और उसके बाद जितने भी शास्त्र लिखे गए; जैसे- चार वेद, किसने लिखे? वेदव्यास ने। फिर अगले जन्मों में उन वेदों की पहले-2 व्याख्या किसने की? आरण्यक निकले, शतपथ-ब्राह्मण आदि निकले, उपनिषद् निकले, पुराण निकले। उन पुराणों में भी जो मुख्य-2 पुराण हैं, कौन-कौन-से? महाभारत पुराण, भागवत पुराण।

किसने लिखे? व्यास ने लिखे ना! और कलियुग में जिस शास्त्र का इतना नॉर्थ इण्डिया में प्रचलन है, कौन-सा? (किसी ने कहा- रामायण) वो भी पहले-2 किसने लिखा? (किसी ने कहा- व्यास) व्यास ने नहीं लिखा, वाल्मीक ने लिखा और हमको बाबा ने बताय दिया- अपने-2 शास्त्रों में अपनी-2 महिमा लिख दी है। तो वाल्मीक रामायण में जो महिमा लिखी गई है, जिसकी महिमा लिखी गई है, वो लिखने वाला कौन है? कौन हुआ? (किसी ने कहा- राम वाली आत्मा) वो ही एक आत्मा, जो वेदव्यास (वाल्मीकि या तुलसीदास) कही जाती है। तो ये तो थ्योरी की बात हुई और प्रैक्टिकल जीवन की भी बात कहो, तो द्वापर से ले करके कलियुग तक जितना भी संघर्ष आया झूठों के साथ, झूठे धर्मों के साथ, वो सत्य सनातन धर्म का पालन करने वाला एक सत्य आदि से ले करके अंत तक प्रैक्टिकल जीवन धारण करके भी प्रैक्टिकल कर्मेन्द्रियों से ऐसे कर्म करता है कि कभी किसी से हार नहीं मानता, सारे जीवन (की शूटिंगकाल में भी) संघर्ष-ही-संघर्ष करता रहता है और विजयी बनता है या हारता है? (किसी ने कहा-विजयी बनता है) शास्त्रों में भी एक ही आत्मा है, जिसकी कभी भी युद्धों में हार नहीं दिखाई गई है; कौन आत्मा है? (किसी ने कहा- नारायण) अर्थ वो ही है- नार+अयन/भा+रत- ज्ञान की रोशनी में लगा रहे सो भारत, 'नार' माने ज्ञान-जल में जो घर बनाकर बैठा रहे वो नारायण। ज्ञान में ही मस्त रहता है। कितना भी संघर्ष आ जाए, कितनी भी युद्ध की बड़े-से-बड़ी स्थिति आ जाए, तो भी ज्ञान-जल में मस्त रहता है। तो ऐसी स्टेज बनाने वाले को 'भारत' (या कम्पिल का कपिल मुनि) कहा गया है; और वो भारत अविनाशी खण्ड है या विनाशी खण्ड है? कैसा खण्ड है? (किसी ने कहा- अविनाशी) धरणी (भारत माता) की ही बात है या चैतन्य पुरुषार्थ की भी बात है? धरणी ज्ञान धारण करती है, ज्ञान की रोशनी धारण करती है या चैतन्य आत्मा धारण करती है? चैतन्य आत्मा धारण करती है।

तो देखो, वो एक ही है ऊँचे-ते-ऊँचा, जिसे इस दुनिया में ऊँचा कहा जाता है, हीरो पार्टधारी। नई दुनिया स्थापन करने वाला है और बाबा भी है। अगर वो नहीं है, तो भला बताओ और कौन है? जो विरोध करने वाले हैं, ढेर-की-ढेर विष्णु पार्टियाँ निकली हैं भुजाओं के रूप में; ब्रह्मा की अनेक भुजाएँ होती हैं कि नहीं? होती हैं! तो जो अनेक मतों वाली निकली हैं, वो बताएँ कि बाबा कौन हैं, जिस साकार में वो निराकार प्रवेश करके अभी पार्ट बजाय रहा है? देखो, ये ज्ञान की बातें याद करते हो कि बाबा कौन है, फिर क्या होता है? फिर भूल जाते हो; इसलिए जो बाबा समझाते हैं कि कैसे आवें तो हम इनको कैसे समझावें। सो तुम लोग को बाबा समझाते हैं; क्योंकि बाबा को फीलिंग आती है। बाबा को बड़ी फीलिंग आ रही है, क्या फीलिंग आ रही है शिवबाबा को? अरे, इतने साल हो गए कि मैं जो समझाना चाहता हूँ, वो कोई भी बच्चे जा करके समझाते नहीं हैं। एक्युरेट टेपरिकॉर्डर की वाणी सुना करके, वी.सी.डी. से एक्युरेट सुना करके समझाते नहीं हैं, जो बात मैं समझाना चाहता हूँ। क्या समझाना चाहता हूँ? (किसी ने कहा- मुकर्रर रथ में बाप आते हैं) हाँ, कि वो ऐसा पक्का निश्चयबुद्धि बनाओ कि वो आत्माएँ एक बार निश्चयबुद्धि हो करके फिर कभी भी अनिश्चयबुद्धि न बनें। ये बाबा को फीलिंग आती है, जो बाबा चाहते हैं, उस युक्ति से समझाते ही नहीं हैं। कौन समझावेंगे? जो एवरलास्टिंग समझा हुआ होगा, एवरलास्टिंग का मतलब? एवरलास्टिंग समझा हुआ कौन? अरे! एवरलास्टिंग समझा हुआ वो, जो कभी भी अनिश्चयबुद्धि न हो। उसको क्या कहेंगे? एवरलास्टिंग समझा हुआ। आज निश्चयबुद्धि और कल अनिश्चयबुद्धि। थोड़े समय के लिए भी अनिश्चय आया तो एवरलास्टिंग कहेंगे? (किसी ने कहा- नहीं कहेंगे) तो उस युक्ति से समझाते नहीं हैं, जो फट से समझने वाले को तीर लग जाए। नहीं तो सिखलाता हूँ, रोज़-2 बच्चों को बताता हूँ। अरे भई! क्या बताता हूँ? अरे! बाप तो एक है, जन्म देने वाला बाप एक है। तुम्हारी आत्मा को जन्म देने वाला माना इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अव्वल नंबर का पार्ट बजाने वाली कौन-सी आत्मा है, ये परिचय कौन देगा? (किसी ने कहा- बाप) ये परिचय मिले और एकदम तीर लग जावे, पक्का तीर लग

जावे कि मैं सूर्यवंशी आत्मा हूँ, मैं और कोई वंश का नहीं हूँ; डायरैक्ट ज्ञान-सूर्य का बच्चा हूँ। नहीं तो सिखलाता हूँ, रोज़ बताता हूँ- अरे भई! बात एक है। देखो, ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त। ये 'ऊँचे-ते-ऊँचा' और 'नीचे-ते-नीचा'- ये कोई दूसरी दुनिया की बात नहीं है, कहाँ की है? इस साकार सृष्टि की ही बात है। ऊँचे-ते-ऊँचा भगवन्त। ये ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, इनको भगवन्त तो नहीं कहेंगे। इनको भगवन्त कहेंगे? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों नहीं कहेंगे? वो ब्रह्माकुमारियाँ, ब्रह्मा को गीता का भगवान नहीं मानतीं? कहती हैं या नहीं कहती हैं? गीता का भगवान कहती हैं ना साकार में! तुम नहीं कहते हो। 'ऊँचे-ते-ऊँचा' कौन है? तुम बताते हो कि ब्रह्मा को, ऊँ राधे मम्मा को ड्रिल कराने वाला यज्ञ के आदि में कोई था या नहीं था? तुम प्रूफ देकर बताते हो। तो उनको भी जो डायरैक्शन देने वाले थे, ड्रिल कराने वाले थे, समझाने वाले थे, वो ऊँचे हुए या ब्रह्मा-सरस्वती या उनके फॉलोअर्स ऊँचे हुए? (किसी ने कहा- समझाने वाला ऊँच हुआ) वो ही ऊँच हुए। तो ये ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, इनको भगवान नहीं कहेंगे। क्या कहेंगे फिर? देवता कहेंगे।

अब समझा, ये ठहरा वो भगवान। तो 'ये' कह करके किस तरफ इशारा किया? (किसी ने कहा- ऊपर की तरफ इशारा) अरे! वो ही जो चार मूर्तियाँ रखी हुई हैं- ऊपर लिंग-मूर्ति, अव्यक्त-मूर्ति और नीचे साकार मूर्तियाँ रखी हुई हैं या आकारी मूर्तियाँ रखी हुई हैं। उनकी तरफ इशारा किया और उनमें से सर्वोपरि मूर्ति की तरफ इशारा किया- ये ठहरा वो भगवान। वो एक ही है ऊँच-ते-ऊँचा भगवन्त। भगवान उनको कहेंगे। 'उनको' कहकर दूर क्यों कर दिया? शिव की आत्मा तो दादा लेखराज ब्रह्मा में ही बोल रही थी, तो उनको कहकर दूर क्यों कर दिया? आगे भविष्य में कोई बजने वाला पार्ट है मुकर्रर शरीर के द्वारा। इतनी सहज बाबा बातें बताते हैं, वो बातें भी भूल जाते हैं। जिस समय बताने लग पड़ते हैं चक्कर में, उस समय ये युक्तियाँ भूल जाते हैं। सृष्टि-चक्र में भी जब समझाते हैं, तो समझाते समय जो बाबा की युक्ति बताना है, वो भूल जाते हैं। फिर जो पुरानी शिक्षाएँ इनकी चली आती हैं, वो ही याद पड़ जाती हैं। पुरानी शिक्षा क्या? अरे! बी.के. वालों ने क्या शिक्षा पढ़ाई? निराकार बिंदु को भगवान माना, जाना और दूसरों को समझाया कि कुछ और समझाया? तो वो ही पुरानी शिक्षाएँ इनकी चली आती हैं। 'इनकी' माने किनकी? 'इनकी'; 'उनकी' नहीं कहा, 'इनकी'। वो ही पुरानी शिक्षा जो चली आती हैं, वो ही याद पड़ती हैं। क्या करते हैं जो ये बात उनको बुद्धि में नहीं बिठाय सकते हैं। ये बात जो बाबा आज बताते हैं कि ऊँच -ते-ऊँचा भगवान, प्रैक्टिकल शरीर में पार्ट बजाने वाला इस सृष्टि पर कौन है, उसका एवरलास्टिंग परिचय देना है। ये बात बुद्धि में बैठाय नहीं सकते।

अब देखो, हम ब्रह्मा के बच्चे ठहरे, हम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं। हमको वर्सा इनसे नहीं मिलता है। वर्सा तो बाप से ही मिलेगा। इनसे नहीं मिलता है- का मतलब? ये जो ब्रह्मा नामधारी हैं, टेम्पररी शरीरधारी, उनसे वर्सा नहीं मिलता है। किससे मिलता है? वर्सा तो एक बाप से ही मिलेगा। भविष्य में मिलेगा या अभी मिल गया? (किसी ने कहा- भविष्य में) तथाकथित ब्रह्माकुमारियाँ क्या समझती हैं- हमको महल-माड़ियों-अटारियों का वर्सा मिल गया कि नहीं मिल गया? वो समझती हैं- हमें मिल गया। अरे! बाप तो बेहद का वही है। अच्छा! वर्सा ये सामने है। ये हमारा वर्सा सामने है, अब ये वर्सा हम ले रहे हैं। सामने है? अरे! वर्सा सन्मुख है? जो कहते हैं- वर्से को याद करो, बाप को याद करो, घर को याद करो। ''अपने शांतिधाम घर को याद करो, सुखधाम को याद करो। .... सिर्फ एक बाप को याद करना है।'' (मु.ता. 15.7.66 पृ.3 आदि) अरे, कभी कहते हैं एक को याद करो, कभी कहते हैं तीन-2 को याद करो। क्या करें? (किसी ने कहा- तीनों एक ही हैं) हाँ! 'इनसे' जब कहा तो साबित होता है कि वो हमारा सुख देने वाला सुखदायी बाप स्वर्ग है, जो हमको स्वस्थिति में स्थित कराने वाला है। सिर्फ हमको ही नहीं, झाड़ के चित्र में

दिखाया है कि ऊपर बैठा हुआ सारी दुनिया की मनुष्यात्माओं को आत्मिक रूप में स्थिर कराकर ऊपर ले जा रहा है या शरीर के साथ ले जा रहा है? (किसी ने कहा- आत्मिक रूप में) सारी दुनिया की मनुष्य-आत्माएँ उस एक बाप को पहचानेंगी, जो मनुष्य-सृष्टि का बाप है और भक्तिमार्ग में भी मानते तो हैं आदम/ऐडम/आदिदेव/आदिनाथ के रूप में; लेकिन जानते भी हैं? (किसी ने कहा- नहीं) अभी तुम जानते भी हो कि इनसे वर्सा नहीं मिलता है। 'इनसे' माना जो भी और-2 ब्रह्मा नामधारी हैं, उनसे वर्सा नहीं मिलता है। ये तो टेम्पररी शरीर हैं। वर्सा किससे मिलता है? मुकर्रर रथधारी बाप से वर्सा मिलता है। वर्सा तो बाप से ही मिलेगा ना! बाप तो बेहद का वही है। फिर 'इनसे' की जगह 'वही' हो गया। यह नहीं है; वो ही है। दूर कर दिया या नजदीक बाजू में है? दूर कर दिया। अच्छा, वर्सा ये सामने है हमारा। सामने आने से क्या स्वर्गीय खुशी होती है या अंदर-2 मुख में राम, बगल में छुरी होती है? (किसी ने कहा- खुशी होती है) अगर छुरी होती है तो विपरीत संकल्प हैं या मन्मनाभव है? (किसी ने कहा-विपरीत संकल्प हैं) विपरीत संकल्प हैं तो इससे क्या साबित है कि सम्मुख हैं या विमुख हैं? वो तो विमुख हो गया।

यहाँ तो सामने की बात है। वर्सा ये सामने है। ये भी वर्सा हम ले रहे हैं। कब ले रहे हैं? तब ले रहे हैं, जब सारी दुनिया की मौत सामने है। अभी कहते हैं- वर्सा सामने है, अभी कहते हैं- मौत सामने है। ये क्या चक्कर! अरे, वो महाकाल भी है। क्या कहते हैं उसे? (किसी ने कहा- महाकाल) महाकाल का माने 'महामृत्यु', वो भी सामने है; लेकिन हमारे लिए बेहद की मृत्यु है या हद की मृत्यु है? हमारे लिए मृत्यु भी बेहद की है। हमारी बेहद की मृत्यु का मतलब है कि हम कभी भी अनिश्चयबुद्धि नहीं बनेंगे। अनिश्चयबुद्धि माने 'मृत्यु' और निश्चयबुद्धि माने 'जन्म'। तो हम बाप से एवरलास्टिंग अमरता का वर्सा ले चुके या लेना है? (किसी ने कहा- लेना है) लेना है माने अभी अनिश्चय आ रहा है! अभी जन्म-मृत्यु का चक्कर चल रहा है! तो मौत है सामने। लेना है तो अभी लेना है; नहीं तो, नहीं लेंगे तो क्या होगा? अरे! वर्सा नहीं लेंगे तो क्या होगा? मौत सामने है, मौत हो जाएगा। अगर मौत हो गई, अनिश्चयबुद्धि बन गए, तो कुछ भी मिलेगा नहीं। अभी क्या मिलने की संभावना है? अरे! अभी हम राजयोग की पढ़ाई किसलिए पढ़ रहे हैं? (किसी ने कहा- राजा बनने के लिए) अभी ये राजाई की पढ़ाई पढ़ करके वर्सा नहीं ले सके और मौत हो गई, अनिश्चयबुद्धि बन करके भाग गए, तो क्या होगा? कुछ मिलेगा? अरे! कुछ राजाई-वाजाई मिल जाएगी कि नहीं? (किसी ने कहा- नहीं) क्यों? अरे! राजा नहीं बनेंगे, रानी बन जाएँगे; वो भी नहीं बनेंगे? (किसी ने कहा- दास-दासी बनेंगे ना!...) अच्छा, जो दास-दासी बनेंगे, जैसे राम-सीता हैं, राधा-कृष्ण के फर्स्ट क्लास दास-दासी बनते हैं; या नहीं? माँ-बाप के रूप में बनते हैं ना! तो अच्छी बात है या खराब बात है? (किसी ने कहा- अच्छी बात है) अगर भाग गए, तो कुछ भी वर्सा नहीं मिलेगा। राधा-कृष्ण जैसे जो सतयुग में जन्म लेने वाले बच्चे हैं, उनको जन्म देने वाले बेहद के दास-दासी (माँ-बाप) भी नहीं बन सकेंगे। कुछ भी वर्सा नहीं मिलेगा। माना राज-परिवार में जन्म-जन्मांतर महामंत्री, सेनापति वगैरह कुछ होते हैं कि नहीं? वो भी नहीं बन पाएँगे। बड़े-2 अधिकारी होते हैं, राज्य में अधिकारी होते हैं कि नहीं? कि एक राजा ही सब-कुछ चलाता है? सहयोगी होते हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- होते हैं) तो वो भी नहीं बन पाएँगे। रानी भी नहीं बन पाएँगे, बच्चों को जन्म देने वाले दास-दासी भी नहीं बन पाएँगे और राज्य के अधिकारी भी नहीं बन पाएँगे और जो अधिकारी हैं, उन अधिकारियों के घरों में दास-दासी भी नहीं बन पाएँगे। कब नहीं बन पाएँगे? अगर जो मौत सामने खड़ी है, उसमें हार खाकर मौत स्वीकार कर लेंगे माना अनिश्चयबुद्धि बन जाएँगे।

पीछे जब भी जन्म होगा। क्या कहा? यहाँ से भाग गए, अनिश्चयबुद्धि बन गए, बाद में जब भी तुम्हारा जन्म होगा। अरे! सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग में कभी जन्म होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा- होगा) जब भी तुम्हारा

जन्म होगा, तभी तुम्हारा रावण के राज्य में होगा; राम के राज्य में जन्म होगा ही नहीं। जन्म और मौत अभी दोनों सामने खड़े हैं। वरण कर लो, जन्म चाहिए या मौत चाहिए? (किसी ने कहा- जन्म चाहिए) क्विक चाहिए या देर-दराज़ में मिले तो भी चलेगा? जन्म चाहिए तो जल्दी जन्म चाहिए या सबसे लास्ट में चाहिए? (किसी ने कहा- जल्दी चाहिए) अगर सबसे लास्ट में चाहिए, तो 16,000 के लास्ट में जन्म आएगा, नंबर मिलेगा या तो 4,50000 में बाद वाला नंबर मिलेगा या तो 9,00,000 का जो अंतिम मणका है, वो अंत वाला जन्म मिलेगा। तो क्विक चाहिए या लेजी चाहिए? (किसी ने कहा-क्विक चाहिए) ऐसा न हो कि टू-लेट हो जावे। एक बारी तो टू-लेट का बोर्ड लग गया। पहला टू-लेट का बोर्ड कब के लिए बोला था? सन् 1976 के लिए बोला था। अभी 8 को छोड़ करके बाकी सबके लिए टू-लेट का बोर्ड लगेगा। फिर क्या होगा? फिर 108 को छोड़ करके बाकी सबके लिए टू-लेट का बोर्ड लगेगा। फिर क्या होगा? ब्रह्मा की हज़ार भुजाओं को छोड़ करके बाकी सबके लिए टू-लेट का बोर्ड लगेगा। फिर? फिर 16,000 को छोड़ करके बाकी सबके लिए टू-लेट का बोर्ड लगेगा, राज-परिवार से बिल्कुल निष्कासित, जन्म-जन्मांतर राज-परिवार में आएँगे ही नहीं; प्रजा वर्ग में ही जन्म लेते रहेंगे। फिर क्या होगा? अरे! प्रजा वर्ग में भी तो नंबर हैं- फर्स्ट क्लास प्रजा, सेकिण्ड क्लास प्रजा, थर्ड क्लास प्रजा। वो भी नंबर लगेंगे या नहीं लगेंगे? (किसी ने कहा- लगेंगे)

तो बोला- टू-लेट होता जावेगा। कितना सहज समझाते हैं। तो बच्चों को फीलिंग होनी चाहिए ना! कि हम जितना बाप का एक्युरेट परिचय देंगे, उतना हमारा ऊँचा राजपद बनेगा। इस बात की फीलिंग आती है कि हमने एक्युरेट बाप का परिचय कितनों को दिया? एक्युरेट दिया या इनएक्युरेट दिया? आज समझा और कल भाग गए तो इनएक्युरेट परिचय हुआ या एक्युरेट परिचय हुआ? (किसी ने कहा- इनएक्युरेट) फीलिंग आनी चाहिए- हम ऐसे तो नहीं समझाते हैं कि आज बच्चा जन्म ले, निश्चयबुद्धि बने और कल मर जावे! हम तो ये करते हैं, हम वो करते हैं, फलाना ऐसे करते हैं, वैसे करते हैं। ये बातें बोलते हैं ना- आज हमने ऐसे समझाया, वो समझाया; वो तो ऐसा समझाता है, उस तरह समझाता है, हम ऐसे समझाते हैं। पता नहीं क्या-2 करते हैं जो ये क्यों नहीं समझाय सकते हैं! क्या नहीं समझाय सकते हैं? 'ये' कहकर किस तरफ इशारा किया? (किसी ने कहा- ब्रह्मा) जो समझने वाले हैं, उनको ब्रह्मा का पार्ट समझाना है? (किसी ने कहा- बाप का पार्ट) तो किस तरफ इशारा किया? (किसी ने कहा- ऊँचे-ते-ऊँचे बाप की तरफ इशारा किया) हाँ! त्रिमूर्ति में जो चार मूर्तियाँ रखी हुई हैं, उनमें सबसे ऊपर जो अव्यक्त-मूर्ति है, उसकी तरफ समझाया, इशारा किया कि ये नहीं समझाते हैं। क्यों नहीं समझाते हैं और क्यों नहीं उन समझने वालों को बुद्धि में बैठता है? समझा, ये ठीक है? समझाओ- ये तुम्हारा बाबा है। किस तरफ इशारा करेंगे? किस तरफ बताया- ये तुम्हारा बाबा है? ब्रह्माकुमारियाँ भी तो यही समझाती हैं, 'ये तुम्हारा बाबा' किस तरफ समझाती हैं? लिंग की तरफ इशारा नहीं करतीं? जो बाबा ने कहा- पहले-2 ये समझाओ। तो प्रदर्शनी में पहला चित्र 32 किरणों वाला शिवलिंग नहीं रखतीं? रखती हैं कि नहीं? (किसी ने कहा- रखती हैं) तो ठीक समझाती हैं? अरे! (किसी ने कहा- रूप नहीं समझाती हैं) रूप तो दिया हुआ है चित्र में! (किसी ने कहा- निराकार बिंदी दिया हुआ है ना! साकार रूप नहीं समझातीं।) क्यों? जो बिंदी रखी है, उसके आस-पास लिंग नहीं रखा है? वो लिंग को ही निराकार का रूप समझ लेती हैं कि जो लिंग है, बड़ा आकार है, वो ही निराकार की यादगार है। है तो निराकार की यादगार; लेकिन ये नहीं समझती हैं कि वो निराकार की यादगार कैसी है। वो निराकार की यादगार, निराकार बने हुए पुरुषार्थी की यादगार है या जो सदैव निराकार रहता है, उसकी यादगार है? जो निराकार पुरुषार्थी है, निराकारी बन जाता है, उसकी यादगार है; तब उसे 'शिवलिंग' कहा जाता है। नहीं तो निराकार को तो लिंग होता ही नहीं। लिंग साकार को होगा या निराकार को होगा? लिंग साकार को होता है; लेकिन साकार का जो लिंग है, उसकी पूजा तब होती है, जब वो अव्यक्त-मूर्ति धारण

करने वाला लिंग-रूप बाप की 100 परसेण्ट याद में ऐसा स्थिर हो जाए कि उस इंद्रिय का जो फल आना चाहिए, वो फल आवे ही नहीं, विकारी सुख की स्मृति आवे ही नहीं और उस कर्म का जो रिज़ल्ट है- साकार बच्चा पैदा होना; उस कर्मेन्द्रिय का रिज़ल्ट क्या आता है? मनुष्य भी वो ही कर्मेन्द्रिय से कर्म करते हैं, रिज़ल्ट क्या आता है? देह का बच्चा पैदा होता है या नहीं होता है? होता है। वो जो लिंग दिखाया गया है, जिसकी पूजा होती है मंदिरों में, उसका रिज़ल्ट क्या होता है? वो अमोघवीर्य है या वो पतित होने वाला है? (किसी ने कहा- अमोघवीर्य है) उसका ऐसा बच्चा पैदा नहीं होता, जो जन्म और मृत्यु में आने वाला हो। जन्म-जरा-मरण के दुखों से परे रहने वाला बच्चा पैदा होता है; कैसा ब्राह्मण बच्चा पैदा होगा? जो जन्म-मृत्यु और बुढ़ापे के दुख से परे रहेगा मृत्युकाल तक। तो बेहद के बच्चे पैदा होते हैं, आत्मा रूपी बच्चे पैदा होते हैं या देह के बच्चे पैदा होते हैं? आत्मिक स्थिति में स्थित रहने वाले बच्चे पैदा होते हैं। तो बताओ, ये तुम्हारा बाबा है। अच्छा देखो, अगर कहते हैं- हाँ, हमने समझा, तो लिखो- ये हमारा बाबा है, बेहद का बाबा है। सारा लिखाय लेना चाहिए- नाम लिखो, रूप लिखो। पूरा आई.डी. प्रूफ ले लेना चाहिए। अगर ठीक देता है तो निश्चयबुद्धि, अगर आई.डी. प्रूफ पूरा नहीं देता है तो अनिश्चयबुद्धि। ओम् शांति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025